प्रथम अध्याय

भीष्म साहनी का व्यक्तित्व और कृतित्व

प्रथम अध्याय

भीष्म साहनी का व्यक्तित्त्व और कृतित्त्व

प्रास्ताविक :-

किसी भी प्रसिद्ध कलाकार या साहित्यकार का व्यक्तित्त्व बड़ाही जटील होता है। उसके व्यक्तित्त्व को देखना तथा परखना इतना आसान नहीं होता। फिर भी कुछ ऐसे आयाम होते हैं जिनसे उसका व्यक्तित्त्व उभरकर हमारे सम्मुख आ जाता है। भीष्म साहनी के व्यक्तित्त्व को देखते समय उनके संदर्भ में विभिन्न पहलुओंपर अब हम विचार करते हैं।

जन्म तथा जन्मस्थान :-

हिंदी भाषा के प्रसिद्ध साहित्यिक श्री. भीष्म साहनी का जन्म 8 अगस्त, 1915 में वर्तमान पाकिस्तान में स्थित रावलपिण्डी शहर में हुआ है। आपके पिताजी का नाम हरिवंशलाल और भाई का नाम बलराज साहनी है। बलराज साहनी जो कि एक प्रसिद्ध फिल्मी अभिनेता थे। आपकी पाँच बहनें हैं। आपके पिताजी एक मध्यमवर्गीय व्यापारी थे, जो गरीबीसे बाहर निकले थे।

श्री भीष्म साहनी का जन्मस्थान रावलपिण्डी शहर था। रावलपिण्डी छोटासा शहर होते हुए भी देश के जीवन की सभी प्रवृत्तियों की झलक लगभग वहाँ मिल जाती थी। आपके व्यक्तित्व को बनाने में बहुत बड़ा योगदान इन्ही प्रवृत्तियों का रहा है।

रावलपिण्डी का एक भाग कैण्टोनमेंट होने के कारण वहाँ गोरे फौजियों की छावनी थी। अंग्रेज अधिकारियों के बंगले, क्लब और सिनेमाघर थे। यह हिस्सा बड़ा साफ-सुथरा और आकर्षक था। खुली सड़कें, बगीचे, सड़कों के किनारे सायेंदार पेडपौधे थे। यहाँ अंग्रेजों का बड़ाही दबदबा था और पाश्चात्य संस्कृतियों की झलक मिलती थी। रावलपिण्डी का दूसरा भाग गन्दा तंग अंधेरी गलियाँ, कीचड और लोगों की भीड से भरा था। यहाँ गुरुद्वारे, आर्य समाज और काँग्रेस के जलसे निकलते थे।

यहाँ पर हिन्दु-मुसलमानों में सांम्प्रदायिक तनाव होते हुए भी, लोग आम तौर पर एक दूसरे की धर्म मर्यादाओं का आदर करते रहते थे। शहर के इस परिवेश की भीष्म साहनी के व्यक्तित्त्व और कृतित्त्व पर भी गहरी छाप दिखाई पड़ती है। आपका 'तमस' उपन्यास सांप्रदायिक दंगों की तथा 'कबिरा खड़ा बजार में' नाटक धर्म और जाती की समस्याओं को ही उजागर करता है।

बचपन :-

बचपन में भीष्म साहनी अक्सर बीमार रहते थे और बीमारी के दिनों में घण्टों अकेले पड़े रहते थे। अक्सर उनके कान भाई बलराज के पावों की आहट सुनने के लिए बेताब रहते थे। कभी पिताजी उनके कमरे में आते, फिर वह थर्मामीटर निकालकर उसे बार-बार झटकते, प्यार से उनके माथे पर हाथ फेरते, और इकन्नियाँ-दुअन्नियाँ पैसे निकालकर उनके सिरहाने रख देते। घर में फिर मौन छा जाता था। लम्बी दोपहर अक्सर खाली होती थी। माँ सत्संग में गई होती, बहने स्कूल में, तब आप अकेले बिस्तर पर पड़े होते, घर पर कौन पहले लौटेगा, कौन बाद में यह सोचते रहते थे। भाई बलराज की बातें उनको अनुठी लगती थी इसी कारण जब भाई बलराज घर पर होते तब भीष्म साहनी का दिल खुशियों से भर उठता था। अपने भाई बलराज के प्रति एक ललक, उत्सुकता, आत्मीयता और इर्षा सभी प्रकार की भावनाएँ आपके दिल में एक साथ मथती रहती थी।

भीष्म साहनी की माँ उन्हें कहानियाँ सुनाती थी तो सभी सन्त मोतीराम के वैराग्य के गीत सुनाती थी। आपके पिताजी माँ को टोकते थे, "बच्चों को वैराग्य के गीत नहीं सुनाया करते । इन्हें खुशी के गीत सुनाते हैं।" भीष्म साहनी को कहानियाँ और गीत सुनते हुए माँ की गोद में अपार सुख का अनुभव होता था और आप सो जाते थे।

बचपन में भीष्मजी बहुत शरारती थे। आप अपनी गली के किसी तांगे में चोरी-छिपे बैठकर शहर की सैर करते थे। आप अपने मुहल्ले के पास ही होनेवाले "कमेटी मैदान' में कुत्तों और मुर्गियों की लड़ाईयों को देखने चले जाते थे। आप अकेले शहर में घुमने जाते थे, इसलिए आपके पिताजी

ने आपके गले में एक ऐसा लेबल बाँधा था जिस पर आपके पिताजी का नाम और पता था। यदि आप शहर में भटक जाते तो कोई व्यक्ति आपको घर छोड़ने आ जाता था।

बचपन में आपकी अनेक गरीब लड़कों के साथ दोस्ती हुई थी। धनी परिवारों के बच्चों जैस खुशकिस्मत आपका बचपन नहीं था। आपके बचपन ने आपको दर्द ही अधिक दिया है।

भीष्मजी का जन्म एक खाते-पीते छोटेसे व्यापारी परिवार में हुआ था। पिताजी गरीबी से ऊपर उठे थें, इसलिए घर के रहनसहन में कोई आडम्बर नहीं था, सादगी थी। घर के अन्दर छोटे से परिवार में स्नेहपूर्ण सम्बन्ध थे। पिताजी कट्टर आर्यसमाजी थे, पर समाज सुधार में गहरी दिलचस्पी रखते थे।

बचपन में अंग्रेजी शासन के खिलाफ चल रहे भारतीयों के आजादी के आंदोलन का गहरा असर भीष्म साहनी के व्यक्तित्व पर हुआ। इसी कारण आपने अपनी विलायती रेशमी टोपी और कुर्ता पहनना छोड दिया। आपके बचपन में पुलिस के लाठी चार्ज में लाला लजपतराय की मौत हुई, भगतसिंह को फाँसी की सजा हुई।

शिक्षा :-

भीष्म साहनी के पिताजी कट्टर आर्यसमाजी थे, इसलिए आपको आर्यसमाज के स्कूल में दाखिल किया गया। आप बचपन में पढ़ाई में भाई बलराज साहनी की अपेक्षा साधारण छात्र थे। आप आठवी कक्षा में जिले में चौथे नंबर पर आये थे, जिस कारण आपको पुरस्कार भी मिला था। लड़कपन में इतिहास में आपकी गहरी दिल्चस्पी थी और बाद में आपकी साहित्य और समाजशास्त्र में रुचि रही।

आपने लाहोर के गवर्नमेंट कॉलेज से सन 1937 में अंग्रेजी साहित्य में एम.ए. की परीक्षा पास की। आप अंग्रेजी भाषा और साहित्य के विख्यात प्राध्यापक थे और हिंदी में अच्छा साहित्य निर्माण करते रहे। बचपन में एक नाटे पंडितजी आपको पढ़ाने आते थे जो सनातन धर्म की शिक्षा देते थे।

रूचियाँ :-

बचपन में बारिश में भटकना, कुत्ते और मुर्गियों की लड़ाईयाँ देखना, तांगे में छिपकर बैठना और पूरे शहर की सैर करना आपको बड़ा अच्छा लगता था। आपको खान-पान में कोई खास रूचियाँ नहीं है। आपकी जवानी के दिनों में हॉकी खेलने का बेहद शौक था, विशेषकर कॉलेज के दिनों में आपने एम.ए. मे दाखिला इसलिए लिया कि हॉकी खेल पाएँगे।

साहित्य और इतिहास में आपको गहरी दिलचस्पी रही है। साहित्य लेखन के माध्यम से वास्तविक समाज का चित्रण करना अब आपकी सबसे बड़ी रूचि है। मूर्तिकला में आपकी गहरी रूचि थी, इसलिए श्रीनगर में एक विदेशी महिला के पास आप मूर्तिकला सीखने चले जाते थे, लेकिन उनकी फीस बहुत ज्यादा थी, वहाँ आप दो-ढ़ाई महीने से ज्यादा सीख नहीं पाए।

नाटक खेलना आपको बहुत अच्छा लगता था। आप गुरु अर्जुनदेव, महाराणा प्रताप आदि का अभिनय अपने भाई के साथ किया करते थे। कॉलेज के दिनों में भी नाटकों में अभिनय किया था। आपको चित्र और कला प्रदर्शनियाँ देखना बहुत पसन्द है। आपने विभिन्न देशों की यात्राएँ की है। आप रशिया में लम्बे अर्से तक रह चूके हैं।

नौकरियाँ :-

भीष्म साहनी जी ने आम शिक्षित आदमी के समान ठहराववाली नौकरी नहीं की। आपने अपनी नौकरियाँ अपनी इच्छानुसार बदली है।

❋ व्यापारी और प्राध्यापक :-

पिताजी की इच्छा के कारण आपने एम.ए. के अध्ययन के बाद पिताजी के साथ व्यापार करने का काम किया। पर इसमें आपका मन नहीं लगता था। यह अपने मन की बात पिताजी से कहने का साहस आपमें नहीं था। इसी बीच भाई बलराज घर छोड शांतिनिकेतन चले गए। चाय और कपड़े की एजन्सी देखने का व्यापार का यह सिलसिला तब टूट गया जब देश के बँटवारे के बाद आप दिल्ली चले

आये। तब आपने अपने को सचमुच आजाद पाया।

भीष्मजी अपने पिताजी का व्यापार का कारोबार देखने के साथ ही साथ रावलपिण्डी के स्थानिक कॉलेज में ऑनररी तौर पर पढ़ाते भी थे। आप देश विभाजन के पश्चात पंजाब के एक कॉलेज में प्राध्यापक बन गए। आपने यहाँ पर अध्यापकों की प्रादेशिक युनियन बनवाई, उसके जनरल सेक्रेटरी बन गए। इसका नतीजा यह हुआ की कॉलेज के व्यवस्थापन ने आपको नौकरी से निकाल दिया। आपको और एक कॉलेज में नौकरी मिली लेकिन चार-पाँच महीने बाद वहाँ से भी छुट्टी हो गई। पंजाब में आपको नौकरी मिलना असंम्भव सा हो गया। कुछ समय बाद दिल्ली कॉलेज में अंग्रेजी साहित्य के व्याख्याता बन गये। आपने अम्बाला के एक कॉलेज में तथा अमृतसर के खालसा कॉलेज में भी प्राध्यापक का काम किया।

❋ अनुवादक और सम्पादक :-

भीष्म साहनी रूसी भाषा जानते है। इ.स.1957 में मास्कों के विदेशी भाषा प्रकाशन गृह में अनुवादक के रूप में विभिन्न भारतीय भाषाओं के लगभग चालिस अन्य मित्रों के साथ आप मास्को चले गये और वही लगभग सात वर्ष रहें। इस दौरान आपने रूसी पुस्तकों का हिन्दी में अनुवाद किया, जिसमें ताल्सताय का ''पुनरूत्थान'' तथा लम्बी कहानियाँ, निकोलाई आस्थाप्स्की का 'जयजीवन', आइमातोव का 'पहला अध्यापक' आदि प्रमुख है।

भीष्म साहनी कुछ सालों तक 'नई कहानियाँ' के सम्पादक भी रहे हैं। आम फिल्म की पत्रकारीता में आपको कभी रूचि नहीं रही है।

❋ अभिनय के शौकिन भीष्मजी :-

अभिनय के प्रति भीष्म साहनीजी में गहरी दिलचस्पी थी। आपके घर का पारिवारिक माहौल ही आपके बचपन में अभिनय संपन्न था। आप अपने भाई बलराज के साथ पृथ्वीराज चौहान, श्रवणकुमार, महाराणा प्रताप का नाटक खेलते थे। आप स्कूल और कॉलेज के दिनों में भी नाटक में

अभिनय किया करते थे। जब आप पंजाब के कॉलेज में प्राध्यापक थे तब भी जन नाट्यसंघ में काम करते थे। आपने अपने भाई बलराज साहनी के कहने पर बंम्बई में 'इप्टा' के नाटकों में अभिनय किया।

✼ पारीवारिक जीवन :-

भीष्म साहनी की शादी अठ्ठाईस साल की उम्र में शीलाजी से हुई है। आपको वरुण और कल्पना दो संताने हैं। शीलाजी काफी समजदार हैं। शीलाजीने रेडिओ स्टेशन में नौकरी करते रहने से घर की आर्थिक तकलीफों को दूर करने में हाथ बँटाया है। वैवाहिक जीवन में आप एक भाग्यवान व्यक्ति है। शीलाजी भीष्मजी के लेखन और स्वभाव की मर्यादाओं को जानती है।

✼ राजनीतिक कार्यकर्ता के रूप में आजादी में योगदान :-

बचपन में भीष्म साहनी ने किसी की प्रेरणा से नहीं तो अनायास ही आजादी के आंदोलन में हिस्सा लिया है। जब भगतसिंह को फाँसी की शूली पर चढ़ाया गया, तब अपना विरोध प्रकट करने के लिए आप पूरे दिनभर भूखे-प्यासे रहें। कागज के बने युनियन जैक पाँवों के जूते पर लगाकर घूमते रहे ताकि अपना विरोध प्रकट हो। चित्तरंजन दास की सभा में आप श्रोता के रूप में सम्मिलित हुए थे। आप रावलपिण्डी में एक स्थानिक कॉलेज में पढ़ाने लगे थे, तब व्यापार भी देखते थे और काँग्रेस का भी काम करने लगे थे।

देश के बॅटवारे के बाद आप भारत आये। लम्बे अरसे तक रूस में रहने के कारण सोव्हिएत संघ की बहुतसी बातों ने आपको प्रभावित किया। आप जीवन को मार्क्सवादी दृष्टिकोण से देखते रहे हैं। अपने साहित्य में इस दृष्टिकोण को लाने की कोशिश करते रहे है। आप अपने बड़े भाई विख्यात अभिनेता बलराज साहनी के समान साम्यवाद की तरफ झूके हुए हैं। इसी कारण आपने 'हानूश' नाटक में सामन्तशाही अथवा तानाशाही में कलाकारों का जो दमन होता है, उसे अभिव्यक्त किया है। कट्टर साम्यवादी होने के कारण आप गूढतावाद में विश्वास नहीं करते।

भीष्मजी और स्वभाव :-

बचपन में भीष्म साहनी के व्यक्तित्त्व पर उनके बड़े भाई बलराज साहनी का गहरा प्रभाव था। आप के मनमें उनके प्रति बड़ा आदरभाव था। आपमें और आपके भाई के स्वभाव में काफी अन्तर था। आप बेहद विनम्र व्यक्ति हैं, इसी स्वभाव का लोग कभी कभी अनूचित लाभ उठाते रहे हैं। यह नम्रता आपके स्वभाव की निर्वेयक्तिता तथा ज्ञानात्मक संवेदना की झलक है। शाम के समय किसी का घर पर आना आपको पसन्द नहीं आता। जब कोई आ जाता तो उसके साथ आप मनसे बात ही नहीं कर सकते। आप एक चुप्पे से कम बोलनेवाले व्यक्ति हैं। अनचाहे मेहमान से आपकी पत्नी को ही बात करनी पड़ती है।

आप जिन्दगी में समझौतावादी है। इसलिए कई बार माँ-बाप को छोड़ जाने का मौका मिला लेकिन आपने माँ-बाप को अकेले छोड़कर जाना उचित नहीं समझा और करीब दस सालों तक पिताकी के व्यापार में हाथ बँटाया। घर के माहौल में आपने विद्रोह नहीं दिखाया है, लेकिन आपका विरोध या विद्रोह एक दूसरे स्तर पर रहा है। इसलिए आपने सरकार की नीतियों के खिलाफ जन नाट्यसंघ में आवाज उठाने के लिए अभिनय किया। उस्तादों की युनियन बनवाई। आपने अपने पिताजी का भी खुलकर कभी विरोध नहीं किया। आप जिंदगी में सादगी से रहना पसंद करते है। अंग्रेजी प्राध्यापकों की तरह मिजाज करना आपको कतई पसंद नहीं है। आप स्वभाव से मिलनसार है। आप की दोस्त मण्डली इसका बहुत बड़ा सबूत है।

※ सन्मान तथा पुरस्कार :-

भीष्म साहनी को विभिन्न साहित्यिक पुरस्कारों से सन्मानित किया गया है। इन्ही पुरस्कारों ने आपके कृतित्त्व और व्यक्तित्त्व को उजागर किया। आप को निम्नांकित पुरस्कारों से विभूषित किया गया -

अ) तमस उपन्यास पर आप को 1975 में भारत सरकार की ओर से 'साहित्य अकादमी पुरस्कार' तथा उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा 'प्रेमचन्द पुरस्कार' भी मिल चुका है।

ब) पंजाब सरकार के भाषा विभाग ने 1975 में ही 'शिरोमणि लेखक' पुरस्कार से आपको पुरस्कृत किया हैं।

क) 1980 में आपको 'एफ्रो-एशियाई लेखक संघ' की ओर से 'लोटस पुरस्कार' प्रदान किया हैं।

ड) आपको 'झरोखे', 'हानूश' और 'कबिरा खड़ा बजार में' आदि साहित्यिक कृतियों पर भी पुरस्कार प्राप्त हुआ है।

इ) दिल्ली प्रदेश साहित्य कला परिषद द्वारा भी आपको सम्मान और पुरस्कार प्राप्त हुआ है।

✲ भीष्म साहनी की रचनाएँ :-

उपन्यास :-

झरोखे (1967), बसन्ती (1980), कडियाँ (1970), मय्यादास की माडी (1988), कुंन्ती, तमस (1973)।

नाटक :-

हानुश (1977), कबिरा खड़ा बजार में (1981), माधवी (1984), मुआवजे।

कहानी संग्रह :-

वाङ्चू (1978), निशाचर (1983), प्राली (1989), शोभायात्रा (1981), पटरियाँ (1973), भटकती राख (1965), मेरी प्रिय कहानियाँ।

जीवनी :-

मेरे भाई बलराज।

बालसाहित्य :-

गुलेल का खेल।

अनुवाद कार्य :-

टॉलस्टॉय का 'पुनरूत्थान' तथा 'लम्बी कहानियाँ', निकोलाई आस्त्रावस्की का 'जयजीवन', आइमातोव का 'पहला अध्यापक' आदि।

✻ भीष्म साहनीजी का उपन्यास में योगदान :-

भीष्म साहनी यथार्थवादी लेखक हैं। आपके उपन्यास का कथ्य सामान्य आदमी की जीवन कथा होती है। आपने सामान्य लोगों के जीवन और उनकी पीड़ा का स्वाभाविक चित्रण किया है। आपके उपन्यासों में स्वातंत्र्योत्तर भारत के समाज का यथार्थ चित्रण मिलता है। आपने अपनी कल्पना से सामाजिक बदलाव की आवश्यकता पर बल दिया है।

✻ झरोखे :-

भीष्म साहनी का यह पहला उपन्यास है। आपने अपने बचपन की कथा को आधार बनाकर यह उपन्यास लिखा है। इस कारण यह आपकी आत्मकथा के रूप में स्वीकार किया जा सकता है।

इस उपन्यास में एक आर्यसमाजी हिन्दू परिवार है। इस परिवार पर इस समाज का गहरा प्रभाव है। परिवार के दोनों लडकों को ब्रह्मचर्य की शिक्षा दी जाती है। नारी के प्रति गैर मनोवैज्ञानिक दृष्टि दी जाती है। उन्हें वैराग्य के गीत सुनाये जाते हैं। पिताजी वेदज्ञ होने के कारण बच्चों को मंत्र, संध्या, पूजा, हवन के लिए प्रेरित करते हैं। बच्चों को पुराने नैतिक बंधनों में रखा जाता है। यह परिवार हिंदू-मुसलमानों के सम्मिलित मुहल्ले में रहता है। मुसलमान के घर में बकरी भूनी जाती है तो हिंदू परिवार वातावरण शुद्धी के लिए हवन करता है। हिंदू परिवार मुसलमानों को म्लेच्छ समझकर अपने बच्चों को उनके अलग रखता है। इसी हिंदू मुसलमानों के बीच जिन में विद्वेष, वैमनस्य और घृणा की भावना है इनमें यह आर्यसमाजी मध्यमवर्गीय परिवार आपना जीवन यापर कर रहा है। लेकिन पिताजी व्यापारी होने के कारण मुसलमान व्यापारियों के साथ हँस-खेलकर पेश आते हैं, परिवार में मुसलमान व्यापारिकयों के खाने-पीने के अलग बर्तन रखे जाते हैं।

आर्य समाजी वातावरण से प्रभावित होकर नौकर तुलसी भी मंत्र, श्लोक, संध्या, हवन सीख लेता है, लेकिन उसके घर की सामाजिक स्थिति में कोई परिवर्तन नहीं होता। वह अन्त तक घर का नौकर ही बना रहता है, और अपने बेटे को भी घर का नौकर ही बना देता है।

'झरोखे' उपन्यास में पीढ़ी संघर्ष को अभिव्यक्त करने का लेखक ने प्रयास किया है। भीष्मजी और बलराज पर पिताजी आर्यसमाजी आदर्शवादी और पुरातन संस्कार कराना चाहते हैं। लेकिन बच्चे नयी जिंदगी जीने के लिए प्रयास कर रहे है। बलराज जी घर छोडकर नयी जिंदगी की तलाश में घर छोडकर चला जाता है। इस वास्तव के आधारपर इस उपन्यास में मध्यमवर्गीय परिवार के अन्तर्विरोध का चित्रण किया गया लगता है।

❊ तमस : -

भारत विभाजन के बाद देश में हुए भीषण सांप्रदायिक दंगों की करूण गाथा को प्रस्तुत करनेवाला 'तमस' उपन्यास है। आपका यह उपन्यास अत्यंत चर्चित, महत्वपूर्ण और साहित्य अकादमी द्वारा पुरस्कृत उपन्यास है। हिंदू-मुसलमानों के सांप्रदायिक दंगों का लाभ अंग्रेजों ने पूरी तरह उठाया है। अंग्रेजों ने देश में 'फूट डालो और राज्य करो' नीती का इस्तमाल किया। यह नीति डिप्टी कमिशनर रिचर्ड के द्वारा चलाई गयी। इसी नीति को सजगता से भीष्मजी ने चित्रित किया है। इसमें भीष्म साहनी ने हिंदू महासभा, मुस्लिम लीग और सिख समाज के जैसी सांप्रदायिक ताकतों को बेनकाब किया है। इ.स.1947 के मार्च अप्रैल में पाँच दिन चले सांप्रदायिक दंगों का करूणामय चित्रण किया है।

मस्जिद के सामने मरा हुआ सुअर देखने के बाद मुस्लिम एक गाय को मारते हैं। इसी बात को लेकर शहर में सांप्रदायिक दंगे शुरू होते हैं। आग जली, लूट, हत्या, बलात्कार का दौर शुरू होता है। यह दंगे गांवों तक पहुँच जाते हैं। इन गावों में नारीयों पर बलात्कार किये जाते हैं, अनेक औरते किसी कुए में कुदकर जान देती है। कम्युनिस्ट पार्टियों के लोग दंगों को शांत करने का प्रयास करते हैं लेकिन वे असफल होते हैं। लोग रिचर्ड के पास जाते हैं लेकिन वह दंगे रोकने मे असमर्थता दर्शाता है।

अन्त में अमन कमेटी की स्थापना होती है। अमन कमेटी द्वारा हिंदू-मुस्लिम एकता के नारे लगाये जाते हैं ताकि शांतता प्रस्थापित हो और पीड़ित लोग चैन की साँस ले सके।

भीष्म साहनीने अपने इस उपन्यास के माध्यम से इस बात की ओर संकेत किया है कि सांप्रदायिक दंगों से हमेशा निम्न वर्ग के लोगों को ही हानि पहुँचती हैं, सामान्य जन ही इसके शिकार होते है और उच्च वर्ग के लोगों की विशेष हानि नहीं होती। इस उपन्यास के कई प्रसंगों के द्वारा मानवीयता उभरकर हमारे सामने आयी है। जैसे राजो अपनी जान मुसीबत में डालकर हरनामसिंह और बन्तों की रक्षा करता है, तो शहनवाज अपने व्यापारी दोस्त लक्ष्मीनारायण की जान बचाता है। यह उपन्यास सांप्रदायिक दंगों से पीड़ित प्रसंगों का संकलन है। तमस उपन्यास का कथ्य कोई साधारण सी कहानी नहीं बल्कि देश विभाजन जैसी एकता को चोट पहुँचाने वाली संघर्षमय घटना की कहानी है। इस घटना से अनेक परिवारों को, लोगों को अपने ठिकानों से हाथ धोना पड़ा, कुर्बानियाँ देनी पड़ी।

कडियाँ :-

भीष्म साहनीद्वारा लिखित 'कडियाँ' उपन्यास मध्यवर्गीय परिवार की समस्या की ओर ध्यान आकृष्ट करता है। इ.स.1970 में लिखित साहनी का यह दूसरा उपन्यास है।

कडियाँ उपन्यास में महेंद्र और उसकी पत्नी प्रमिला के वैवाहिक अनबन और पति-पत्नी के बिखरते रिश्ते की कथा है। महेंद्र पर आधुनिक तो प्रमिला पर पुराने संस्कारों का प्रभाव है। प्रमिला का आदर्श उसके पिताजी नारंग साहब हैं, वह उन्हीं के साथ महेंद्र की तुलना करती है। यह बात महेंद्र को पसंद नहीं। वह चाहता है कि पत्नी उसके भावनाओं को समझे, आधुनिक नारियों जैसा आचरण करें, हंस खेलकर बातचित करे, लेकिन पुराने खयालोंवाली पत्नी प्रमिला को घर ही संसार लगता है। महेंद्र पति-पत्नी की एकनिष्ठता को बकवास मानता है और अपने ऑफिस की कैशियर सुषमा के प्रेम में पड़ जाता है। सुषमा भी महेंद्र से अलग हो जाती है। महेंद्र मिसेज भगत से प्रेम पाने की कोशिश करता है लेकिन वह हमेशा महेंद्र से दूर ही रहने की कोशिश करती है। महेंद्र को न कैशियर सुषमा का

प्रेम मिलता है न ही पत्नी प्रमिला का। महेंद्र प्रेम की हीन भावना का शिकार होने के कारण वह नैतिक बंधनों को तोड़ डालता है। महेंद्र और प्रमिला के अनबने संबंधों का परिणाम उनके बेटे पप्पू पर होता है। पप्पू भी हीन भावना का शिकार होता है। प्रमिला आर्थिक दृष्टि से आत्मनिर्भर होकर अन्त में महेंद्र से अलग हो जाती है।

पति-पत्नी के वैवाहिक रिश्ते जब मात्र जीवन का भार बन जाते हैं तब उनका टूटना अनिवार्य होता है, इस बात की ओर लेखक ने उपन्यास के द्वारा संकेत किया है। लेखक इस संकेत का समाधान तलाक के रास्ते ढूँढता है और इस समाधान को आधुनिकता के संदर्भ में जोड़ देता है।

बसन्ती :-

बसन्ती उपन्यास दिल्ली महानगर के उन निम्नवर्ग के लोगों का कथ्य है जो रोजगार की तलाश में निरन्तर उजड़ता-बसता है। इस उपन्यास के माध्यम से भीष्म साहनी ने पूँजीवादी और सामन्ती व्यवस्था के विरुद्ध विद्रोह व्यक्त किया है। निम्न वर्ग की उपेक्षित और शोषित नारी बसन्ती इसका नेतृत्व करती है जो प्रचलित व्यवस्था के ढाँचे को तोड़ने का संघर्ष करती है, स्वतंत्र मार्ग खोजने का प्रयास करती है। अभावों, संकटों, संघर्ष और उपेक्षाओं का जीवन जीने के बाद भी बसन्ती मानवी चरित्र को लिए हुए है।

इस बात की ओर उपन्यास में संकेत किया है कि आजादी का लाभ केवल अधिकारियों, पूँजीपतियों, नेताओं, ठेकेदारों कोही मिला है। सर्वसाधारण लोगों को नहीं। निम्न वर्ग के लोगों की बस्तियों का बार-बार टूटना, बसना उनके नसिब में ही लिखा है। निम्न वर्ग की बसंती, बुलाकी, दीनू तथा बस्ती के अन्य लोग बार-बार बस्तियाँ टूट जाने पर अपने अस्तित्व और साहस का परिचय देते हैं और पूँजीवादियों के खिलाफ संघर्ष छेड़ते हैं। उपन्यास के निम्नवर्ग के लोगों पर शहरी जीवन की सुख-सुविधाओं का भी प्रभाव पड़ रहा है। बस्ती की लड़कियाँ बिंदी-लिपस्टिक लगाती है, फोटो खिंचवाती है और छिपकर शहर की किसी खिडकी से झाँक झाँककर टेलीविजन देखती है। फिल्मों का असर बसंती

के व्यक्तित्व पर देखने को मिलता है। बसंती परिस्थिती वश होने के कारण साठ साल के बुलाकी के साथ शादी करती है। फिर भी वह उसके साथ विद्रोह करके दीनू के साथ फिल्मी टाईप शादी करती है। यह विवाह मानो सामन्ती व्यवस्था और सामाजिक मूल्यों के खिलाफ विद्रोह का भाव लगता है।

बसन्ती उपन्यास में मध्यमवर्गीय परिवार के श्यामा बीवी, श्रीमती सूरी जैसे लोग भी आते है जो धार्मिक पाखण्ड, विडम्बना और निर्ममता लिए हुए है। श्यामा बीवी बसंती को चोर समझती है तो दूसरी ओर उसके प्रति सहृदयता व्यक्त करती है। श्यामा बीवी की सहृदयता वास्तविक एक धार्मिक पाखण्ड ही है। गर्भवती बसन्ती को सूरी साहब आश्रय नहीं देते किन्तू बसन्ती के पिताजी के सामने मानवता का ढोंग करते हैं। इस उपन्यास में एक ऐसा पात्र है जो गरीबोंसे, निम्नवर्ग के लोगोंसे मीठी जबान से नहीं बोलता उनके कोई काम नहीं करता लेकिन वह अफसर है। गरीबों की झोपडियाँ, बस्तियाँ टूटने से शायद उसे आनंदही मिलता होगा। बसन्ती की बस्तियाँ टूटने से अनेक व्यापारी लोग, दूकानदार उसका आनंद लूटाते हैं।

पंचायत सरकार बसन्ती के झोपडियों का पुनर्वास न करने के कारण निम्नवर्गीय लोगों का पंचायत व्यवस्था से विश्वास उठने लगता है। रोजगार के लिए लोग अपनेही हाथों से अपनी झोपडियों को तोडने के लिए मजबूर होते है।इस में बुलाकीराम जैसा एक अत्यंत दिलचस्प पात्र है जो गर्भवती बसन्ती से अपना वंश चलाने हेतू शादी करता है और लोगों के हँसी-मजाक का विषय बनता है।

भीष्म साहनी ने सामाजिक सम्बन्धों और रचनात्मक परिवर्तनों का सूक्ष्म चित्रण किया है। दिल्ली के निम्नवर्ग के लोगों का जनजीवन चेतना, संघर्ष और विद्रोह का सामाजिक धरातल पर यथार्थ चित्रण 'बसन्ती' में देखने मिलता है। बसन्ती की कथावस्तु में नाटकीयता होने के कारण वह अपनी अलग पहचान रखने में सक्षम हुआ है।

※ मय्यादास की माडी :-

'मय्यादास की माडी' भीष्म साहनी का उपन्यास उन्नीसवी शताब्दी के भारत के सामाजिक, राजनीतिक जीवन का चित्रण करता है। इसमें हवेली में बसनेवावली सामन्तों की चार पीढियों की कथा है। इसमें दीवान धनपतराय के चरित्र को प्रमुखता से चित्रित किया गया है। वह अपने मझले और पगले बेटे का विवाह करता है जो एक उसके षड़यंत्र का भाग ही है। दीवान मय्यादास के माडी की नीलामी का बदला चुकाने तथा ठेकेदार मंसाराम को गजमण्डी मुहल्ले में अपमानित करने के लिए ही दीवान धनपतराय अपने बेटों का विवाह मंसाराम और हरनारायण की बेटी से करता है। दीवान धनपतराय का चरित्र बहुत ही मजेदार है। वह दीवान गोकुलदास की रखेल चंद्रा का बेटा है। लेकिन मय्यादास उसे वारीस मानने तैयार नहीं है। इसलिए दीवान धनपतराय का मैय्यादास सारा सामान माडी के बाहर फेंक देता है। धनपतराय ऊँटों की पूछों का व्यापार करता है। वह अंग्रेजों के सैनिकों का ऊँटों की पूँछे देने का काम करता है और रसद पहुँचाता है। इसी व्यापार के कारण मुहल्लेवाले उसे 'दूमकटा दीवान', 'सनकी दीवान' समझते हैं। अंग्रेजों ने धनपतराय को तीन गावों के किसानों का लगान वसूल करने का काम सौंपा है। इसी कारण वह दीवान मय्यादास को हमेशा नीचा दिखाने की कोशिश में रहता है।

उपन्यास में अंग्रेजों का शोषक और साम्राज्य विस्तार का रूप स्पष्ट होता है। अंग्रेजों ने धनी लोगों को हिंदुस्थान का कच्चा माल वक्त पर मिलता रहे इसीलिए रेलगाडी शुरू की। दीवान धनपतराय एक ऐसा सामन्तवादी चरित्र है जो किसानों से सख्ती से लगान वसूल करता है। अंग्रेजों के अच्छे संबंधों का वह अपने स्वार्थ के लिए उपयोग करता है। स्वतंत्रता सेनानी और अपने सौतेले भाई लेखराज को धनपतराय हमेशा के लिए अंग्रेजों की कैद में डाल देता है। दीवान धनपतराय के बडे बेटे बॅ. हुकुमतराय की अंग्रेजों से साँठगॉठ है। इसी कारणवश वह अंग्रेज पुलिस अधिकारी हेन्री को स्वतंत्रता आंदोलन दबाने की सलाह देता है और हेन्री यह आंदोलन दबाने की पूरी कोशिश करता है।

इस उपन्यास में सामान्य जन अकाल, भूखमरी और अनेक बिमारीयों का शिकार हो रहे हैं। इसाई मिशनरियाँ और आर्य समाज शिक्षा का प्रसार करने की कोशिश में लगे हैं। विधवा समस्या कों भी उठाने का प्रयास भीष्म साहनी ने इसमें किया है। उपन्यास का कथ्य बिल्कुल नया है। इसका शीर्षक 'मय्यादास की माडी' सार्थक है।

भीष्मजी और नाट्यकृतियाँ :-

भीष्म साहनी प्रतिभासंपन्न कलाकार है। आपने उपन्यास लेखन के साथ-साथ नाटक लेखन में भी अपना योगदान दिया है। आपने ऐतिहासिक और सामाजिक दोनों प्रकारों के नाटक लिखे हैं। अब तक आपने चार नाटक लिखे हैं -

1) हानूश (1977)
2) कबिरा खड़ा बजार में (1981)
3) माधवी (1984)
4) मुआवज़े (1993)

इन नाटकों का संक्षिप्त परिचय इस प्रकार है -

"हानूश" :-

'हानूश' भीष्म साहनी द्वारा लिखित सन 1977 में प्रकाशित पहला नाटक है। सन 1960 में भीष्म साहनी चेकोस्लोवाकिया की राजधानी प्राग गये थे। सड़कों पर घूमते-घूमते एक दिन उन्होंने एक मीनारी घड़ी देखी। उस घड़ी के बारे में वहाँ विभिन्न जनश्रुतियाँ प्रचलित थी। घड़ी बनाने वाले कलाकार हानूश, और राजा द्वारा हानूश को मिले पुरस्कार के विषय में सूना और उसी आधार पर भीष्म साहनीने हानूश नाटक लिखा।

'हानूश' ताला बनानेवाला कारीगर था। उसके कई वर्षों तक घड़ी बनाने का सपना देखा था। उसी सपने को वह दिन-रात मेहनत करके पूरा करना चाहता है। ताले बनाने से उसको इतनी

कमाई नहीं होती कि वह सुचारू रूप से अपने परिवार को पालपोस सके। इसी कारण उसकी पत्नी कात्या का स्वास्थ्य बिगड़ता गया, वह जवानी ही में बूढ़ी लगने लगी। सत्रह साल तक यह जीवनक्रम चलता रहा। कात्या निराश हो गयी थी पर हानूश की बेटी यांका अपने पिता को प्रोत्साहीत करती रहती थी।

हानूश की कड़ी मेहतन और दृढ संकल्प-शक्ति का अच्छा परिणाम हुआ और हानूश को घड़ी बनाने में सफलता मिली। घडी नगर पालिका की मीनार में लगा दी गयी। सारे नगर में उत्सव मनाया गया। हानूश का गुणगान किया गया, राजा ने उसे एक हजार सोने की मोहरे दी, लेकिन सनक के कारण यह आदेश भी दिया कि उसकी दोनों आँखें निकाल दी जाय ताकि वह उसी प्रकार की दूसरी घडी न बना सके। राजा के इस अमानवीय व्यवहार के कारण हानूश कुछ विक्षिप्त-सा हो गया, कभी वह घडी को तोडने की कोशिश करता तो कभी उस पर पत्थर फेंकता। कुछ समय बाद घडी बंद होने के कारण राजा के पदाधिकारी हानूश को बुलाकर हुक्म देते हैं कि वह घड़ी को दुरूस्त करे और पुन: चलावे। हानूश को घड़ी की मरम्मत के लिए मीनार पर ले जाया जाता है। उसके मन में कुछ क्षण ऐसे विचार आता है कि वह घड़ी पर हथौडा मार कर घड़ी तोड़ दे, परंतु उसका हाथ हथौडा नहीं मार पाता। क्योंकि उसे लगता है की घड़ी की कमानी लोहे का पूर्जा नहीं, स्वयं उसका दिल है। हानूश घड़ी दुरुस्त करता है, वह घड़ी फिरसे चलने लगती है। किन्तु अधिकारी उसपर यह आरोप लगाते है कि हानूश राजआज्ञा को तोड़कर अपने साथी जेकब के साथ दूसरे देश में भाग रहा था। वहॉ घड़ी बनाने के लिए जा रहे थे तभी वे उसे पकड़कर राजा के पास ले चलते हैं। इतने में घड़ी की आवाज टन-टन कानों में गूँज उठती है। हानूश की आँख में आसू चमकते हैं और उसके ओठों पर मुस्कान दौड़ पड़ती है।

'हानूश' नाटक के माध्यम से नाटककार ने गरीब कलाकारों की दयनीय स्थिति को तथा अमीरों की सनक को दर्शाया है। सामंतीय व्यवस्था पर यह तीखी आलोचना करता है और कलाकारों के प्रति सहृदयता का भाव प्रकट करता है।

'कबिरा खड़ा बजार में' :-

संत कबीर के जीवन और व्यक्तित्व को आधार बनाकर सन 1981 में लिखा गया यह जनवादी नाटक है। नाटक के आरंभ से ही लगता है कि कबीर नूरा और नीमा का बेटा नहीं है, वह किसी विधवा ब्राह्मणी की संतान है। उसे उसकी माँ ने सामाजिक लज्जा के कारण एक तालाब के किनारे छोड दिया था। नूरा और नीमा नामक जुलाहे दंम्पति ने उसे उठा लिया था और वे उसे माता-पिता का स्नेह-दुलार देकर पालते रहे थे। कबीर का मन धंदे में उतना नहीं लगता जितना अपनी मित्र-मंडली में लगता तथा पंडितों-मुल्ला-मौलवियों से शास्त्रार्थ करने में लगता। कबीर ने अपने पदों के माध्यम से सामान्य, गरीब और छोटी जातियों का वह अनुयायीसा बन गया लेकिन अपने इसी विचारों के कारण वह धर्म-गुरूओं का कोप-भाजन बन गया है, इसी कारण उसे मार-पीट भी सहनी पडी। उसके विरोधक उसकी झोपडी को आग लगाते हैं। पर वह सत्संग करना नहीं छोड देता। इसी बीच बिहार पर विजय-पताका फैराने के बाद दिल्ली बादशहा सिकन्दर लोदी काशि से गुजरता रहता है। उसके आगमन की सूचना पाकर शहर का कोतवाल अपने एक मुसाहिब कायस्थ के माध्यम से कबीर को सत्संग न करने का पैगाम भिजवाता है। पर कबीर नहीं मानता, बादशहा कबीर से मिलता है। उसकी बातों से प्रभावित होकर उसे अपनी बात कहता है। लेकिन कबीर बादशहा की बात न मानकर अपनी बातों को सही ठहराता है और उस पर चलने का अपना संकल्प भी दुहराता है। बादशहा गुस्से में आकर उसको धमकी देता है और साथ ही साथ उसके बारे में यदि कोई शिकायत सुनने आयी तो उसे कठोर दंड देने की धमकी भी देता है। भीष्म साहनी ने इस नाटक के माध्यम से सामन्ती अभिजात्यवादी प्रवृत्ति तथा शोषितों, अन्याय पीड़ितों के बीच द्वन्द्व दिखाया है।

माधवी :-

भीष्म साहनी द्वारा रचित 'माधवी' यह तिसरा नाटक है। इस नाटक में पौराणिक कथा है। इसीको आधार बनाकर लेखक ने नारी की शोचनीय स्थिति को हमारे सम्मुख रखा है।

ऋषि विश्वामित्र अपने क्रोधी एवं दुराग्रही स्वभाव के लिए सर्व परिचित हैं। उन्हीं के शिष्य गालव और राजकुमारी माधवी की कथा इस नाटक का आधार है। शिक्षा समाप्ती के बाद गालव अपने गुरू को गुरुदक्षिणा देने की हठ करता है। शिष्य का हठ देखकर सहज क्रोधी विश्वामित्र उसे आठ सौ अश्वमेधी घोडे देने कहते हैं। इतने घोडे देने में असमर्थ देखकर गालव राजा ययाती के पास जाता है और अपनी समस्या उनके सामने रखता है। ययाती जो उस समय राज त्यागकर आश्रम में रह रहे थे। गालव से कहते हैं कि वह मुनि विश्वामित्र को समझा देंगे, किन्तु गालव यह बात नहीं मानता। वह अपने निश्चय पर अडा रहता है। आत्मसम्मान और अपने दानवीर बिरुद की रक्षा के लिए राजा अपनी पुत्री गुणवान सुन्दरी माधवी को गालव को दान में दे देता है ताकि गालव उसके माध्यम से आठ सौ अश्वमेघ जुटा सके। माधवी को पाकर गालव उसे अपने पास ही रखने की सोचता है। परंतु राजा और गुरू दोनों के साथ विश्वासघात की बात सोचकर वह माधवी के माध्यम से आठ सौ घोडे पाने का निश्चय करता है।

प्रथम वह माधवी को अयोध्या नरेश हर्यश्च को देकर उनसे दो सौ अश्वमेधी घोडे हासिल करता है। बाद में वह काशि के महाराज दिवोदास और भोजनगर के वृद्ध राजा उशीनर को माधवी सौंपकर उनसे दो-दो सौ घोडे पा लेता है। इस प्रकार उसके पास छः सौ घोडे हो जाते है और वह उन्हें महर्षि विश्वामित्र को सौंप देता है। अब पूरे आर्यावर्त में दो सौ घोडे नहीं थे क्योंकि सब वितस्ता नदी की भयंकर बाढ़ में बह गये थे। अतः गालव अपना वचन पूरा करने के लिए उन दो सौ घोडे के बदले माधवी स्वयं को ही ऋषि विश्वामित्र को सौंप देती है। इस तरह गुरूदक्षिणा पूरी होती है।

भीष्म साहनी ने इस नाटक से स्वार्थपरता और नारी को भोग्या मानकर उसके साथ मनमाना आचरण करने की सामाजिक प्रवृत्ति को पूरी निर्ममता से उद्‌घाटित किया है। पौराणिक कथा को आधार बनाकर प्रगती-शील चेतना का भाव प्रकट करने में भीष्म साहनी यशस्वी हुए हैं।

मुआवजे :-

भीष्म साहनी का मुआवजे चौथा नाटक है। इस नाटक के माध्यम से आपने समाज में गिरते हुए जीवन-मूल्यों, नैतिक पतन, भ्रष्टाचार आदि पर कटू प्रहार किया है। देश के राजनीतिज्ञों, धार्मिक संप्रदायों के चौधरियों, प्रशासन और पुलिसकर्मियों पर भी तीखा प्रहार किया है।

नाटक के प्रारंभ में ही सांप्रदायिक दंगा भडकने वाला है इसकी सूचना मिल जाती है। इस संबंध में एक-दो छोटी-छोटी घटनाएं घट भी चूकी है। अतः प्रशासन, धनवान नागरिक, राजनेता सभी के मन में आशंका, तनाव और चिंता का माहौल है। इन घटनाओं का लाभ बटन फैक्ट्री का मालिक और उसका छोटा भाई, पुलिस कमिशनर तथा शहर का प्रसिद्ध गुंडा उठाता है। वही गुंडा नाटक के अंत में एक पेशेवर राजनेता तथा रईस आदमी बन जाता है। यह सभी लोग दंगा रोकने का प्रयास नहीं करते बल्कि दंगे के बाद की स्थिति से निपटने का कार्यक्रम बनाते हैं। मुआवजे की रक्कम किसको कितनी दी जाय इस पर सोचते हैं। दंगा होने पर मंत्रिजी के भाषणों की टेप कैसी सुनाई जाय तथा उन्हें आदर्श के रूप में कैसे प्रकट किया जाय इसपर सभी सोचने लगते हैं। धनवान व्यापारी लोग भी दंगे की अफवाह मात्र से फायदा उठाते हैं। दंगे का हर कोई फायदा उठाना चाहता है पर इससे मरता है, कष्ट पाता है, बेघर और बरबाद होता है सिर्फ गरीब। दीनू रिक्शेवाला ऐसा ही गरीब है। शहर के गुंडे भी ऐसे अवसरोंपर पैसे लेकर किसी का भी कत्ल कर देते हैं। जग्गा और हमीदा ऐसे ही गुंडे हैं।

भीष्म साहनी ने इस नाटक से अपनी सर्वोच्च प्रतिभा का दर्शन कराया है। समाज में स्थित विभिन्न वर्गों की मानसिकता का वर्णन बड़ी खूबी के साथ प्रकट किया है। आपने इस नाटक से यही बताना चाहा है कि सांप्रदायिक दंगों को भडकाने वाले तो खतरनाक होते ही हैं पर उनसे भी अधिक खतरनाक संवेदनहीनतावाले लोग हैं।

भीष्म साहनी के नाटकों में उनका अनुभव, अध्ययन, चिंतन और सबसे बना जीवनदर्शन देखने मिलता है।

कहानी संग्रह :-

भीष्म साहनी एक सशक्त और प्रभावी कहानीकार हैं। आपके निम्नलिखित कहानी संग्रह हैं ।

1) भटकती राख

2) पटरियाँ

3) वाङ्चू

4) शोभायात्रा

5) निशाचर

6) पाली

7) मेरी प्रिय कहानियाँ ।

'भटकती राख' :-

भीष्म साहनी के 'भटकती राख' कहानी संग्रह की कहानियाँ अधिक लोकप्रिय रह चूकी हैं। इस कथा संग्रह की कहानियों की भाषा अतीत धर्मा रही हैं, परंतु ये वर्तमान परिवेश को भूल नहीं पाती। आदिम कथारस को आपने वर्तमान की अभिव्यक्ति का जरिया बनाया है। आपकी 'भटकती राख' कहानीसंग्रह की कहानियाँ भविष्य के पर्देपर आज की तस्वीरे बनाती है, साथ ही अतीत के संदर्भ में आज की तात्कालिन ध्वनियाँ भी मुखर करती हैं। इस कथासंग्रह की कहानियाँ मानव जीवन के रोजमर्रा का यथार्थ वर्णन करते हुए आगे बढ़ती है और सीधे अपने लक्ष्यपर पहुँचती हैं। हर कहानी किसी न किसी जिंदा चरित्र का वर्णन करती है। इन कहानियों के चरित्र और परिस्थितियाँ तत्कालिक है। कहानियों में जिंदगी का विस्तार और विविधता के सहज अनुभवों का दर्शन होता है। लेनीन का साथी, बीवर, सिफारिशी चिठ्ठी सिर का सदका, गीता रहस्सरनाम के चरित्र और अनुभव आज की जिंदगी में हमें कहीं न कहीं जरुर मिलते हैं। ये कहानियाँ पढ़ने वालोंपर अमिट छाप छोडती हैं, जीवन की जटिलताओं और अन्तर्विरोध को स्पष्ट करनेवाली हैं। आदमी की आर्थिक दशा को प्रकट करनेवाली है। इन कहानियों का शिल्प बहुत खुरदरा रहा है।

पटरियाँ :-

पटरियाँ किरमिच के दलाल मध्यमवर्गीय केशोराम की कहानी है जो सिर्फ पैसे कोही सबसे बड़ा मानता है। वह समझता है कि जिसके पास पैसा है वहाँ पोजिशन है, बाकी सब ढकोसला और बकवास है। वह गरीब है इसलिए समाज और घर में उसकी उपेक्षा होती है। पटरियाँ कहानी मुख्यतः केशोराम जैसे मध्यमवर्गीय हीनताग्रस्त समाज की छटपटाहट को प्रकट करने वाली हैं।

'तस्वीर' एक ऐसे विधवा की कहानी है जिसे पति के जीते जी प्रेम नहीं मिला, वह विधवा होने से ससुर भी उसे बोझ समझते हैं। वह बच्चों के दिल में भी अपने लिए जगह नहीं बना सकती।

'ललक' एक अभावग्रस्त लडके की कहानी है। वह अपने पडोस के अमीर दोस्त हरदेव जैसी अमीर जिन्दगी बिताना चाहता है। उसकी नकल करना चाहता है पर गरीबी के कारण कुछ नहीं कर पाता।

'नया मकान' गिरीजा जैसे कुछ न करनवाले क्रांति के दिवास्पप्न देखनेवाले एक क्रांतिकारी के मनस्थिति का मर्मस्पर्शी चित्रण करती है। वह मजदूर युनियन का लीडर है, आशावादी है, इसलिए सोचता है कि एक दिन क्रांति आ ही जाएगी। समाजवादी क्रांति के स्वप्न में वह कुछ काम धाम नहीं करता था। उसकी पत्नी उसे घर बसाती है। वह अच्छासा काम भी करता है लेकिन रात के वक्त शराब पीकर समाजवादी क्रांति के सपने देखता है। उसकी पत्नी उसकी क्रांति का मजाक उड़ाती है।

राजनीति पर करारा व्यंग्य करने वाली 'मौकापरस्त' आज की कहानी है। अपने पार्टी के अनुयायी की मौत के बाद भी राजनीतिक लाभ उठाने की चेष्टा करते हैं। मानवीय संवेदना को तिलांजली देने वाले राजनीतिक लोग होते हैं जिसे दर्शाने का कार्य इस कहानी के माध्यम से किया है।

'जख्म' एक ऐसे अवकाश प्राप्त इंजिनिअर की कहानी है जो मनही मन टूट गया है। उस इंजिनिअर की बेटी पागल हो चुकी है और बेटा मर चुका है। जिसने अपने जवानी के दिन कुछ नहीं किया लेकिन वह आज देश की समस्याओं पर विचार परख लेख लिखता है। विज्ञान, धर्म और नीतिशास्त्र

पर आधारित धर्म की वह जरुरत समझता है। अपने विचारों से वह अपने चेहरे पर समाजसेवक का नकाब ओढे हुऐ हैं। कहानी के नौजवान को ऐसे समाजसेवक से घृणा है, चिढ़ है। इसलिए वह उसकी पीटाई भी करता है। यह कहानी समाजसेवकोंपर व्यंग्य करनेवाली है।

वेश्याओं के जीवन का चित्रण 'अभी तो मैं जवान हूँ' कहानी करती है। ये वेश्याएँ गाव में सूखा पड़ने से शहर आ गयी है। सरकारी नौकर, घर का नौकर, फौजी जवान, लौंडे, शराबी सभी अपना भूखा तन लेकर उनके पास आते हैं और तन की प्यास मिटाते हैं। ये वेश्याएँ अपने ग्राहकों का पैसा चुराती है, किसीने स्तन का दूध माँगने पर उन्हें गालियाँ देती हैं। वेश्याओं के अड्डे का मालिक एक मुसलमान मियाँ है और उसके अनेकों चमचे उसका साथ देते हैं। इस कहानी के जरीए लेखक ने वेश्याओं की बस्ती तथा अड्डे का हु-ब-हू चित्र हमारे सम्मुख खडा करने का प्रयास किया है।

'परों का निशान' और 'इंद्रजाल' इन दो कहानीयों में बीमार मनुष्य के हृदय की व्यथा स्पष्ट हुई है। 'रास्ता' एक अध्यापिका गोविंदमाँ की कहानी है। गोविंदमाँ का प्रेमी ब्राह्मण युवक होने से उसे, माँ के कारण घर नहीं रख सकता। माँ की इच्छा उसकी मजबुरी है और गोविंदमाँ की मजबूरी है। उसने मन ही मन उसे अपना पति मान लिया है, अब वह उसे छोड नहीं सकती। मालकिन के भाई का सेक्रेटरी सात साल के बाद उसके जीवन में आ जाता है, उसे वह अपना दोस्त मानती है। इस कहानी में गोविदमाँ के मालकीन की कहानी भी है जो अपने पति को छोड़कर अपने दोस्त के साथ रहती है। मालकीन का भाई एक नेता है जो अपनी बहन की सभी लीलाओं को जानता है लेकिन समाजलज्जा के कारण कुछ नहीं कर पाता यह उसकी मजबूरी है। इस कहानी में नियतीवादी के विचार को स्पष्ट किया है।

अर्चना और गिरीश के परकिया प्रेम की 'डोरे' कहानी है। गिरीश माँ-बाप की इच्छा के खातिर अर्चना से शादी नहीं करता किसी दूसरी लडकी से शादी करता है। अर्चना प्रेम के प्रति वफादार है, वह चाहती है कि गिरीश पत्नी से प्रेम न करें, उसके पास हमेशा आता जाता रहें। अर्चना गिरीश को अपने प्रेमपाश में बाँधने के लिए सबकुछ करती है जो गिरीश चाहता है। गिरीश एक ओर पती का

कर्तव्य निभाता है, दूसरी तरफ अर्चना से प्रेम करता है। इस कहानी के प्रेम का त्रिकोण का गिरीश केंद्र है। वह पुराने संस्कारों का होने पर भी आधुनिकता उसका पिछा नहीं छोड़ती। इसी आधुनिकता के परकिया प्रेम में वह जी रहा है। अर्चना की द्विधा मनस्थिती का चित्रण इस कहानी में देखने को मिलता है।

'ढोलक' कहानी आज के उस शिक्षित युवक की मनस्थिति की ओर संकेत करती है जो भारतीय विवाह पध्दति को नकारता है। रामदेव को विवाह की पूरानी रस्में निभाना एक पूरानी घिसीपिटी परंपरा लगती है। पाश्चात्य महिलाएँ इन्ही विवाह की रस्मों को देखना चाहती है, इन रस्मों की तारीफ करती है, तो रामनाथ विवाह की रस्में निभाने के लिए तैयार हो जाता है। लेखक का संकेत है कि आज हिन्दुस्थान का शिक्षित वर्ग उसी विचार, सभ्यता के अनुसार रहना चाहता है जो पाश्चात्य सभ्यता में है।

मनुष्य का सत्य परमसत्य खोजने के लिए पत्नी और संसार को त्याग देनेवाले एक सन्यासी की कहानी है 'भगोडा'। लेकिन उसका मन साधना में नहीं लगता, उसे हमेशा अपने घर की याद आती है। वह मानवीय संबंधों को भूल नहीं सकता, उन्हें तोड नहीं सकता।

'सन्यासी' कहानी एक पति-पत्नी की है जो अपने बच्चे की जान बचाने के लिए अनेको प्रयास करते हैं। उसे जड़ी बूटी मिलाते है, मंत्रोचरण करते हैं लेकिन फिर भी बच्चे की जान नहीं बचा पाते। सन्यासी अन्त में जीने के लिए मानवीय संबंध पाने के लिए सन्यास को त्याग देता है और संसार में आ जाता है। इस कहानी के माध्यम से भीष्म साहनीजी ने यह बताया है कि मनुष्य का सत्य मनुष्य के हृदय में ही मिलेगा, उसके बाहर नहीं मिल सक़ता। इसमें लेखक ने सन्यासी के मन के द्वंद्व को दर्शाया है।

देशविभाजन और सांप्रदायिक दंगों से प्रभावित कहानी है 'अमृतसर आ गया है'। जब तक रेल पाकिस्तान इलाके में होती है, हिन्दु, मुसलमान मुसाफिरोंसे डरते है, उनके द्वारा अपमानित होकर भी चुपचाप रहते हैं, अपनी आँखों के सामने हिंदू औरतों पर मुसलमानों के अत्याचारों को देखते हैं लेकिन कुछ नहीं कर पाते। लेकिन जब रेल भारत के इलाके आती है, तब वही दशा जो पाकिस्तान

इलाके में हिन्दुओं की थी, मुसलमानों की बन जाती है, उसी प्रकार का व्यवहार हिंदु भी उनसे करते हैं। हिंदु और मुसलमान दोनों भी एक दूसरे के प्रति भयभीत और आशंकित है जिसे लेखक ने इसके द्वारा प्रकट किया है। साम्प्रदायिक समस्या को भी लेखक ने यहा प्रभावी ढंग से व्यक्त किया है।

भीष्म साहनी के 'पटरियाँ' कहानीसंग्रह की कहानियाँ सोदेश्य हैं जिनमें करूणा, व्यंग्य, अन्तरंगता और रस है। ये कहानियाँ मनोरंजक और हृदयग्राही हैं। इनमें समाज के व्यापक विभिन्न क्षेत्रों में विषमताओं से परेशान हुए लोगों का हृदयस्पर्शी चित्रण है। इसकी कहानियाँ मनोरंजक होने के साथ साथ मानवीय संवेदनाओं को दर्शाती है।

'वाङ्चू' :-

भीष्म साहनी का 1978 में प्रकाशित यह पाँचवा कहानी संग्रह है।

'ओ हरामजादे' यह इस कहानी संग्रह की पहली कहानी है - इसमें लाल नामक प्रवासी भारतीय इंजिनिअर के देशप्रेम का वर्णन किया है। यह इंजिनिअर अपने पिताजी पर रूठकर युरोप में जाता है और विदेशी मेमसाहब से शादी कर लेता है। वह उसी देश में रहता है और वहाँ रहकर भी वह भारतीय संस्कृति और लोगों के प्यार को भूल नहीं पाता। घर में भी वह हमेशा अपने देश की याद में खोया रहता है इस कारण उसकी पत्नी उसे हिंदुस्थान की लडकी से शादी करके सुखी हो जाने की सलाह देती है। लेकिन वह, पत्नी प्रेम के कारण विदेश से वापस नहीं आना चाहता। एक बार पत्नी को लेकर हिंदुस्थान के आग्रा, कलकत्ता, जालंदर की सैर करता है। वह यहीं रहकर छोटी-मोटी नौकरी पाकर हिंदुस्थान में रहना चाहता है लेकिन उसकी पत्नी को हिंदुस्थान पसंद नहीं आता। वह पत्नी के प्रेम के कारण फिर हिंदुस्थान न आने की कसम खाता है और विदेश चला जाता है।

'वाङ्चू' कहानी संग्रह में 'सागामिट' एक अफसर के परिवार से संबंधित कहानी है। इसमें अफसर का छोटा भाई जग्गा नामक नौकर के पत्नी के साथ अनैतिक संबंध रखता है। यह बात खुद अफसर जानता है लेकिन वह यह भी जानता है कि गरिबों को सौ-पचास मिले तो उनका मुँह बंद हो

जाता है या फिर कुत्ते के मुँह में हड्डी दिए तो वह नहीं भूकेगा। इसलिए अफसर जग्गा के प्रति दयालु है। उसका वेतन बढाता है, कभी-कभी सौ-पचास रूपये देता है। जब जग्गा को अपनी पत्नी की अनैतिकता की बातों का पता चलता है तो वह रेल के नीचे आत्महत्या कर देता है। अफसर, भाई बिक्की को जग्गा की जान से बढ़कर समझता है। जग्गा को केवल इस परिवार में इन्सान के रूप में नहीं बल्कि सागमिट तैयार करनेवाले नौकर के रूप में याद किया जाता है। अफसर की पत्नी सभी बातें जानती है और अपनी सहेली को बताती है। इससे अफसरी के सारे पाखंड खुल जाते हैं। यह कहानी अन्त में दिलचस्प बनी है।

गौरे नामक दाई की कहानी है, 'पिकनिक'। शहर के मध्यमवर्ग के घरों में काम करने वाली वह दाई है। पिकनिक में वकिल साहब जैसे मध्यवर्ग की अमानवीयता का चित्रण भीष्म साहनी ने किया है। गौरी का पती शराबी होने के कारण उसे गौरी के तन और पैसे से मतलब है। बडे बंगले में रहनेवाले लोग गौरी के बच्चों को कहीं बैठने नहीं देते वे समझते है उनके बैठने से जगह गंदी या खराब होती है। एक दिन तो बच्चों को बैठते देखकर वकील साहब की पत्नी अपने कुत्ते को वहाँ छोड देती है ताकि कुत्ता बच्चों को काटे, और बच्चे वहाँ कभी न बैठे। लेकिन कुत्ता बच्चों के साथ खेलने लगता है। इसपर गौरी अपना विद्रोह प्रकट करती हुई कहती है सडक सरकार की है उसे वहाँ से कोई नहीं उठा सकता। गौरी के माध्यम से लेखक ने निम्नवर्ग औरतों की पीड़ा, मुश्किलों और उनके विद्रोह को प्रकट किया है।

'मालिक का बंदा' एक भ्रष्ट रेल्वे पुलिस हवालदार रतनसिंह की कहानी है। रतनसिंह रेल्वे के गोदाम से सिमेंट और स्पिलरों की चोरी दिनदहाडे करता है और मंदिर बनवाता है। मंदिर बनवाने के पीछे रतनसिंह के सुपरिटेंड का संरक्षण है। उसके सुपरिटेंड उसके मालिक है, भगवान है जो मंदिर बनवाने में उसकी मदद करते हैं। अपने सुपरिटेंड के प्रति वह इतना वफादार है कि कवि सम्मेलन में निमंत्रित कवियों के खयाल रखने के लिए वह टिकटवाले मुसाफिरों को रेल के डब्बे में चढने नहीं देता

उनके साथ क्रूरता का व्यवहार करता है। निमंत्रित कवि भी मुसाफिरोंपर होनेवाले अत्याचारों को सिर्फ देखते रहते हैं। रतनसिंह का भ्रष्टाचार करके मंदिर बनवाने का तरीका गलत है। रतनसिंह मालिक के प्रति इमानदार है लेकिन यह इमानदारी वैचित्र्यपूर्ण है, भ्रष्ट है, जिसे समाजमान्यता नहीं देता।

'खण्डहर' भीष्म साहनी के पूराने घर और कश्मिर के पौराणिक खण्डहर की कहानी है। इस कहानी में शरद की पत्नी रचना कश्मिरी लोगों में मिलकर पर्यटन का स्वाद लेना चाहती है। भीष्म साहनी को अपने पूराने घर में बुवा की करूण जिंदगी उन्हें याद आती है। बचपन की यादें उन्हें सताने लगती है। वे अपने बुवा का पूराना चित्र साथ ले जाना चाहते हैं लेकिन रचना उन्हें रोकती है। रचना पुराने खण्डकर के टूकड़े को प्रेम-प्रेमिका के साथ ले चलने के लिए बेचैन है। रचना कलावादी दृष्टिकोन की है लेकिन बुवा के चित्र में उसे न कला दिखाई देती है न भावना का लगाव। 'खण्डहर' में लेखक ने पूराने बातों को दर्शाया है।

एक समझदार व्यवसायी बने कॉमरेड की कहानी है 'गुलमुच्छे'। जो दुनिया के बदलाव को समझता है और देश की वर्तमान स्थिति में बुद्धिजीवियों का योगदान, दायित्व जैसे विषयों पर लेख लिखता है। कॉमरेड व्यवसायी बननेपर भी पार्टी में है। उसके मतानुसार देश के नेताओं ने पार्टी कार्यकर्ताओं को विशेष महत्व नहीं दिया है, सिर्फ स्वार्थ सेवा से पार्टियाँ नहीं चलती। इसी कारण उसने पार्टी से हटना पसंद किया है। वह सम्मेलन का अध्यक्ष बन जाने के लिए तो तैयार हो जाता है लेकिन विमान का किराया माँगने के लिए नहीं चूकता।

'वाङ्चू' एक ऐसे चीनी बौद्ध भिक्षु की कहानी हैं जिसे त्रासदी के कारण अपनी जान गवानी पड़ी। वाङ्चू सन 1962 के कुछ साल पहले प्रोफेसर तान-शान के साथ बौद्ध धर्म का अध्ययन करने हेतू भारत आया था। वह हमेशा भारत के अतीत मेही खोया रहता है। उसे वर्तमान भारत से कोई मतलब नहीं है। वह प्रोफेसर तान-शान के साथ वापस अपने देश नहीं जाता। वह भारत में बना रहकर बौद्ध धर्म का अध्ययन करने लगता हैं। इसी बीच वह दो साल के लिए चीन लौट जाता है। चीन में उसे

समाजशास्त्र और मार्क्सवाद तथा भारत-चीन के राजनीतिक संबंध पर सवाल पूछे जाते हैं जिसका वह सहीं जबाब नहीं दे पाता। चीन में उसका मन नहीं लगता वह फिर भारत लौट आता है। इसी बीच भारत-चीन युद्ध शुरू होता है, वह चीनी होने के कारण पुलिस उसपर चीनी जासूस समझकर थाने में हाजिरी देने के लिए बुलाती है। परंतु एक दिन सारनाथ के बौद्ध आश्रम में वह मर जाता है। यह कहानी आज के संदर्भ में बौद्ध धर्म की आलोचना करती है साथ ही धार्मिक स्वतंत्रता के मूल्य की स्थापना करती है। वाङ्चू केवल मनुष्य है, न वह चीनी है, न भारतीय है। इसमें मानवमूल्यों की उपेक्षाओंपर आघात किया है।

इस प्रकार भीष्म साहनी ने परिवेश तथा समाज का, व्यक्ति का चित्रण करते हुए समाज के रूप को व्यंग्यपूर्ण रीति से प्रकट किया है। मानव की व्यथा, करूणा, बेबसी, विद्रोही भावना, पाखण्ड को अपने 'वाङ्चू' की कहानियों से भीष्म साहनी ने हमारे सम्मुख प्रस्तुत किया है।

'शोभायात्रा' :-

'शोभायात्रा' यह भीष्म साहनी का चौथा कहानी संग्रह है। समकालिन हिंदी कहानी में सामाजिक यथार्थ को अभिव्यक्त करने वाला यह कहानी संग्रह है। यह कहानी संग्रह मानव के सामाजिक मूल्यों को स्पष्ट करता है।

'निमित्त' कहानी देशविभाजन की हिंदू-मुसलमानों की मानसिकता को स्पष्ट करती है। इस कहानी में रामगढ फैक्टरी के मैनेजर की क्रूरता और चालाकी का कलात्मक चित्रण किया है। यह मैनेजर व्यक्ति को केवल निमित्त मानता है और भाग्य और भगवान को ही दुनिया की हरके घटना का कारण मानता है। इसी कारण शेरसिंह ड्रायव्हर इमामदीन को बचाता है तो बाकी बारह लोग दंगे में मारे जाते हैं।

बच्चे और खिलौने के माध्यम से वर्तमान जीवन की भयावह संवेदनहीनता का मार्मिक चित्रण 'खिलौने' कहानी में देखने मिलता है। जीवन की त्रासदी के कारण निम्नवर्ग संवेदनहीन बन गया

है। वह सिर्फ स्वार्थ के लिए ही दोस्ती रखता है। वह अपना फायदा देखता है। कहानी के बच्चों के प्रति उनके माता-पिता की वीणा, दिलिप भी संवेदनाहीन हो गये है।

तीन बहनों के लिए शादी से पहले का प्रेम और प्रेमी हँसी मजाक का विषय 'भटकाव' कहानी में है। उन्हें इस बात का गम नहीं की इन्हीं के कारण प्रेमियों का जीवन बरबाद हो चुका है। उन तीन विवाहित बहनों के माध्यम से ही लेखक ने प्रेम और स्वार्थ के भटकाव को व्यक्त किया है।

'धरोहर' कहानी की माँ फल की अपेक्षा किए बिना ही बुढापे में आम का पेड लगाती है। यहीं पेड आज के बहु-बेटों के लिए परेशानी बनता है। वे नहीं चाहते कि स्कूल के बच्चे तथा आसपास के रहनेवाले उसका फायदा ले सके, उसके आम खा सके। इसलिए वे आम की टहलियाँ काट डालते है। जिस हेतू से मॉ ने पेड लगाया था उस हेतू को उद्देश्य को अपने स्वार्थ के कारण बहू-बेटे पूरा नहीं कर सकते।

गांधीवादी विचारधारा से प्रभावित व्यक्ति की कहानी है 'रामचन्दानी'। रामचन्दानी को अंग्रेजों की सभ्यता से लगाव नहीं है। इसी कारण वह अंग्रेजी होटल में कॉटों, चम्मच के बदले हाथ से भोजन करना पसंद करता हैं। वह वेटर को टिप नहीं देता यह बात उसके दोस्तों को तथा अंग्रेजी ग्राहकों को पसंद नहीं है। इसी वजह से अंग्रेज मालकीन के होटल में उनका भोजन बंद हो जाता है। अंग्रेजी ग्राहकों ने मालकीन पर दबाव डालकर रामचन्दानी और उनके दोस्तों का भोजन बंद कराया। इस कहानी के माध्यम से अंग्रेजों की रंगभेद नीतीपर व्यंग्य किया है।

बडे अफसर बलवंत की पत्नी मीरा की कहानी है - 'मेड इन इटली'। मीरा विलायत में बनी हरेक चीज को महान समझती है। इसी कारण वह अपने घर में विदेशी वस्तु रखना तथा लेना पसंद करती है। विलायती वस्तु पर उसे गर्व है। उसका मानना है कि भारत की अपेक्षा युरोपीय वस्तु सुंदर होती है। लेकिन एक दिन इटली के दुकानदार द्वारा भारत में बनाया बैग दिया जाता है तब उसका घमण्ड टूट जाता है। उस बैग पर वह मेड इन इटली का लेबल लगाकर घर ले जाती है। सिनेमा घर में

में जब मीरा की कमर को एक व्यक्ति हाथ लगाता है तब मीरा का पति पुलिसद्वारा उसकी पिटाई करवाता है। लेकिन इटली में इटली के व्यक्तिद्वारा उसकी साडी सुंदरता और कालि आँखों की प्रशंसा करना तथा उनके द्वारा हाथों को चुमना उसे अच्छा लगता है। लेखक ने भारतीय अफसरों की पत्नियों के बदलते सामाजिक मूल्य को दर्शाया है।

'फैसला' कहानी आज सत्य उसेही समझा जाता है जो कागज पर आ जाता है, इसी पर आधारित है। आज की दुनिया में स्वार्थी व्यवस्था होने के कारण मूल्य और नीति से जीवन यापन करनेवाले व्यक्ति अव्यावहारिक और उपहास का विषय बने हुए हैं। 'फैसला' कहानी में हीरालाल समझता है कि फाईल के मुताबिक चलना चाहिए। हीरालाल व्यवहारी है। हीरालाल मानता है कि सरकारी नौकरी का उसूल इमानदारी नहीं। लेकिन जजसाहब शुक्लाजी जैलदार के मुकदमें में सत्य को समझकर फैसला देते हैं तब उनपर भ्रष्टाचार का आरोप होता है। इसपर शुक्लाजी नौकरी को त्याग कर दर्शनशास्त्र के अध्यापक बन जाते हैं। सिद्धातों और आदर्शों की दुनिया में ही एक इमानदार आदमी इत्मीनान से जीवन यापर कर सकता है। जिसे इस कथा से सूचित किया है।

स्कूटर चोरी के मुकदमें की कहानी है 'लीला नन्दुलाल की'। स्कूटर चोरी होने पर उसके मालिक को पुलिस थाने और एन्शोरन्स के ऑफिस में बार-बार चक्कर काटने पडते हैं। पुलिस थाने में उसका ठीक जवाब तक नहीं मिलता। कहा जाता है स्कूटर मिलने के बाद आपको खबर दी जाएगी। लेकिन जब वरिष्ठ पुलिस अधिकारी का हस्तक्षेप होता है तो थानेदार पुलिस इन्स्पेक्टर मानवीयता से पेश आता है। एजन्ट नन्दुलाल के हस्तक्षेप के कारण एन्शोरन्स के सारे पैसे एक ही दिन में स्कूटर मालिक को मिलते है, जिसके साथ हेडक्लार्क घण्टों तक बातें नहीं करता था। स्कूटर चोर द्वारा मालिक को स्कूटर मिलती है, लेकिन चोरी का मुकदमा इतने सालों तक चलता है कि स्कूटर खण्डहर हो जाता है फिर भी जजसाहब न्याय नहीं दे पाते। यह कहानी पुलिस व्यवस्था और न्याय-व्यवस्था पर करारा व्यंग्य करती है।

भीष्म साहनी ने घर की रसोई बनानेवाली नौकरानी धर्मो, बनारस का रिक्षावालों और सास-बहू के वाद-विवाद के अनुभवों को 'अनुठे साक्षात:' कहानी में लिखा है। धर्मो को पतिद्‌वारा सताया जाने पर भी वह अपना पतिधर्म निभाना चाहती है। वह एक मर्द के रसोईघर में काम करना नहीं चाहती। इसलिए लेखक के घर का काम छोडती है। वह अशिक्षित होने के कारण उसने अपने नाम को सार्थक किया है।

'बनारस' कहानी बनारस की रिक्षावालों की गरीबी, चालाकी, इमानदारी, भ्रष्ट पुलिस व्यवस्था का दर्शन करानेवाली कहानी है। सास-बहु का सामान्य बातों को लेकर चलनेवाला विवाद 'भेट' कहानी में दर्शाया है।

बिहार के दंगापीड़ित और बेसहरा हरिजन लोगों की कहानी है 'सडकपर'। जो जातिव्यवस्था का शिकार है। बिहार छोड दिल्ली आनेवाले हरिजन को दिल्ली सड़कोंपर दर-दर ठोकरे खाने के लिए मजबूर इन्ही दंगों ने किया है।

मनुष्य मन की कमजोरी और संकुचित भावनाओं को प्रकट करनेवाली कहानी है - 'शोभायात्रा'। उदयगिरी आदर्श धर्म को माननेवाला राजा होने के कारण उसने अपने राज्य में आदर्श धर्म को प्रस्थापित किया। उनके राज्य में पुरानपंथी लोग मंदिर में बकरे की बली चढाने का आयोजन करते है। वे अपने पंथ के अनुयायों की सहाय्यता से इस हिंसक कार्य को रोकने की कोशिश करते है और इसमें सफल होते हैं। लेकिन इसके लिए जो मार्ग अपनाया जाता है वह पाठक को इस कहानी के व्यंग्य का और उसके द्‌वारा मनुष्य मन की कमजोरी का एहसास दिलाता है।

उपर्युक्त सभी कहानियों से यही समझ में आता है कि भीष्म साहनी ने अपने परिवेश के प्रति सजग है। भारतीय व्यवस्था से लेकर देशप्रेम की भावना का साक्षात दर्शन उनके इस कहानी संग्रह से मिलता है।

'निशाचार' :-

भीष्म साहनी का 'निशाचर' कहानीसंग्रह मानवीय संवेदना और मानवीय रिश्तों को अभिव्यक्त करनेवाला कहानी संग्रह है। इस कहानी संग्रह का केंद्रबिंदू व्यक्ति नहीं, मनुष्य है।

मनुष्य को जहाँ अधिक प्रेम मिलता है वहाँ रहना मनुष्य पसंद करता है । तब वह वहाँ के परिवेश का बिल्कुल विचार नहीं करता। चाचा मंगलसेन ने अपना अधिकतर समय एक गली में गुजारा है। बलराम सिर्फ अपना कर्तव्य पूर्ण करने के हेतू से ही चाचा मंगलसेन को अपने घर, डिफेन्स कॉलनी में ले आता है। लेकिन मंगलसेन को वहाँ का परिवेश और घर पसंद नहीं आता। वह फिर अपनी पुरानी गली में चला जाता है। वहाँ के लोगों का मंगलसेन से कोई रिश्ता न होकर भी उसकी देखभाल करते है, उसे रोटी देते हैं, उसे प्रेम देते हैं। लेकिन बलराम की पत्नी उसे अपना नहीं मानती। इसी कारण मंगलसेन को बलराम का घर अच्छा नहीं लगता। इसी गली में एक होमियोपेथी का डॉक्टर रहता है उसे उपाधि प्राप्त नहीं फिर भी कम फिस में सामान्य लोगों का इलाज करता है। जब बलराम मंगलसेन को लेने आता है तब वह इसी गली की मिट्टी में ही मरने की इच्छा जताता है। इसी प्रकार गली के लोगों में मानवीय सहिष्णूता है जो इस कहानी में दिखायी है।

लुधियाना के एक प्रवासी भारतीय की कहानी है 'सलमा आपा'। जो जाम्बिया से कराची होते हुए हिंदुस्थान लौट रहा है। जब भारत-पाकिस्तान के बीच तनाव बढ़ रहा था तब इसी प्रवासी भारतीय को सलमा आपा का भाई अपने घर में पनाह देता है। उसके मन में यह भावना नहीं है कि वह अपने देश के दुश्मन नागरिक को पनाह दे रहा है। मन की अनुभूति के आधार पर ही भारतीय प्रवासी सलमा आपा के भाई का घर खोज निकालता है।

'कण्ठहार' कहानी उस मालती की है जो जिंदगी को सिर्फ अपनी सुखचैन की दृष्टिसेही देखती है। उसे लगता है कि उसकी उस अपाहीज बेटी सुषमा ने ही उसका सुखचैन छिन लिया है। वह उसका इलाज अच्छे डॉक्टर से करवा रहीं है। पति-पत्नी मालती और रमेश एक दूसरे पर इल्जाम लगाते

है कि उनके कारण सुषमा अपाहिज जन्मी है। इधर सुषमा भी कहती है कि माँ-बाप के कारण ही वह अपाहिज जन्मी है। माई सुषमा की सेवा इसलिए कर रही है कि ईश्वर की सेवा कर रही है। लेकिन रमेश और मालती को लगता है कि माई पैसे के लिए सुषमा की सेवा कर रही है।

गली मोहल्ले में रात के वक्त कागज के टुकडे और रद्दी सामान जमा करनेवाली केसरों और उसके बच्ची की 'निशाचर' कहानी है। कसरों को हमेशा यही डर बना रहता है कि गली का जमादार आ जाने पर उसे कागज नहीं मिलेगा। यदि वह देखेगा तो उसका झोला लेकर सारे कागज जला डालेगा यही डर हमेशा केसरों को रहता है। कहानी के माध्यम से साहनी जी ने संकेत दिया है कि यही जमादार केसरों की बच्ची से जबरदस्ती करता है। इस दृष्टि से कहानी का 'निशाचर' शीर्षक सार्थक है।

निशाचर कहानी संग्रह में 'संभल के बाबू' इन्सान के बदलते रिश्ते की कहानी है। भीष्म साहनी पर फिल्मी प्रभाव होने के कारण घर का दरवाजा जल्दी न खोलनेवाले नौकर नत्थु को उन्होंने तमाचा मारा था, फिर भी नत्थु नौकर चुप बना रहा। माँ-बाप ने उनको इस बात पर समझाया था। उनके दूसरे बेटे रमेश ने जब नौकर नत्थु को थप्पड मारने की कोशिश कि तो नत्थु ने उसका हाथ पकड लिया। भीष्म साहनी ने नौकर को नौकरी से निकालना चाहा तो उसने नौकर युनियन के सेक्रेटरी के पास शिकायत की। इस सेक्रेटरी ने भीष्म साहनी को धमकी दी कि नत्थु के जितने पैसे बनते है वह तुरन्त अदा करे वरना घर के सामने धरना देंगे। लेखक ने इस कहानी से इस बात की ओर संकेत किया है कि मानवीय रिश्ते अब टूट रहे हैं और मालिक नौकर के बीच कर्तव्य, अधिकार और अर्थ के संबंध स्थापित हो रहे हैं।

नये लेखकों की अभावग्रस्त जिन्दगी अवहेलना, उपेक्षा और जग हँसाई की 'दिवास्वप्न' कहानी है। लेखक का प्रकाशक से शोषण होता है। लेखक को साहित्य पढ़ने पाठक मिलता नहीं है। मशहूर लेखक बनने के बाद ही शोहरत और पैसा दोनों मिलते हैं। लेखक भीष्म साहनी ने अपने लेखकीय अनुभवों को प्रभावित ढंग से इस कहानी में बताया है। लेखक बनना एक 'दिवास्वप्न' ही है।

'जहूर बख्श' कहानी का जहूर बख्श सांप्रदायिकता की आग का शिकार है। साम्प्रदायिकता की आग में उसके बीबी और बेटे मारे जाते हैं। अधजली पाण्डुलिपियाँ और किताबें घर की आग से वह निकालता है। लेखक ने इस कहानी के माध्यम से पाठकों के सामने सवाल रखा है कि - लोग साम्प्रदायिकता की आग का नफा-नुकसान कब समझेंगे?

'मुर्ग मुसल्लम' कहानी आज की जेलव्यवस्था, खोखली राजनीति, भण्डाफोड करनेवाली पत्रकारिता और राजनेता और बड़े अफसरों के रिश्तोंपर प्रकाश डालती है। देश की आजादी के लिए लोग जेल जाकर यातनाएँ सहते थे। लेकिन आज जेल जाने का अर्थ बदल सा गया है। आज के युग में जेल में बढ़िया विलायती भोजन से लेकर बिडी-सिगरेट सबकुछ मिलता है। आजकल लोग आराम और ऐश के लिए जेल चले जाते हैं। नेताजी के भतीजे की मुर्ग-मुस्सलम जेल का जेलर अच्छी भोजन व्यवस्था करता है ताकि नेताजी प्रसन्न होकर उसको तरक्की दे सके। यही भतीजा जेल यात्रा के बाद नगरपालिका का उपाध्यक्ष बन जाता है। पुलिस रिटल होटल के गरीब और बेगुनाह बावर्जी को पकड़कर कैदी बना देती है ताकि वह जेल के कैदियों को अच्छा भोजन बना सके।

भारतीय रेल व्यवस्था की अनियमितता, अव्यवस्था और यात्रियों की मानसिकताओं को स्पष्ट करनेवाली कहानी है 'पोखर'। कहानी यात्रा-वृत्तांत रूप में लिखी है जिससे रेलयात्रा का चित्र पाठकों के सामने उभरकर आ जाता है।

अनपढ़, गँवार और स्त्री-मर्यादा का पालन करनेवाली एक पंजाबिन औरत की 'सरदानी' कहानी है। जो अपनी जान पर खेलकर मास्टर करीमदिन को सांप्रदायिकता की आग से बचाती है। सरदानि के मन में हिंदू -मुसलमानों की सांप्रदायिकता और कट्टरपंथियता की भावना नहीं है। साम्प्रदायिक दंगों में लोगों की मानसिकता, भय और अविश्वास को लेखक ने स्पष्ट किया है।

'विकल्प' कहानी में आधुनिकता, बोध, पति-पत्नी और परस्त्री के रिश्तों को स्पष्ट किया है। शादी से पहले मुन्नी को देवी और प्रेयसी कहनेवाला उसका पति शादी के कुछ साल बाद विवाह को

एक बोझ मानता है। मुन्नी आधुनिक रहनसहन की आदत के कारण पति को छोडना नहीं चाहती। तब पति उसके सामने विकल्प रखता है कि वह अपने बंगले में अपने दूसरी प्रेयसी के साथ अलग रहेगा, मुन्नी का अलग कमरा होगा और बच्चों को किसी होस्टल में डाल देंगे। मुन्नी इसपर कोई फैसला न करते हुए अपना दु:ख मौसाजी को बताती है। मुन्नी का दु:ख सुनकर अनेक घरों के परस्त्री मामलों को सुलझाने वाले मौसाजी को लगता है कि अब जमाना बदल गया है। इस कहानी के माध्यम से लेखक ने गिरते चले जीवनमूल्यों की ओर संकेत दिया है।

हाँकी दर्शकों की भावनाओं को 'नदामत' कहानी स्पष्ट करती है। लेखक के कॉलेज की टीम और पेशावर की टीम के बीच हॉकी मैच है। पेशावर की टीम से गाँव की टीम हार गई तो अपनी नाक कट जायेगी ऐसे गाँव के दर्शक समझते हैं। लेकिन जब पेशावर की टीम का कॅप्टन असगर अली जख्मी हो जाता है तो दर्शक दु:खी हो जाते है। यहाँ मानव मन की जटिलता को दर्शाया है।

'अतीत के स्वर' कहानी प्राचीन मंदिर के मानचित्र बचानेवाले पुरातत्ववेत्ता और अतीत का अध्ययन करनेवाली की कहानी है। उसे वर्तमान से कोई लगाव या मोह नहीं है वह अतीत को बचाना चाहता है, उसकी रक्षा करना चाहता है। इसी कारण वह बाढ़ग्रस्त लोगों को नहीं बचाता, बाढ़ में भी मंदिर के मानचित्र बनाता रहता है।

मौत से डरनेवाले और उसी कारण से लोगों में उठना-बैठना छोड देनेवाले ऐसे व्यक्ति की 'दहलीज' कहानी है। उस व्यक्ति को लगता है कि उसके पास आनेवाले हर व्यक्ति रोग के किटाणू लेकर आता है। प्रेम के कारण स्नायूजल मे तनाव उत्पन्न होने से उसकी जिंदगी कम होगी ऐसा उसे लगता है। इस कारण उसने शादी तक नहीं की। टेलिफोन पर हर बार बुरी खबरे सुनने को मिलती है। इसलिए उसने अपने कमरे से टेलिफोन हटा दिया। दूसरी तरफ अमरनाथ है जो जीने के लिए मौत से संघर्ष कर रहा है। उसकी बेटी तपेदीक से तो पत्नी गठिया से बीमार है। उसका बेटा मौत से संघर्ष करते-करते मर गया। फिर भी अमरनाथ जिंदगी जीने के लिए बीमा एजन्ट बन चुका है। जिन्दगी के

लिए मौत से संघर्ष कर रहा है। लेखक ने इस कहानी से जीवन की विवशता को स्पष्ट किया है।

'निशाचर' कहानी संग्रह की कहानियाँ मानव जीवन के संघर्ष को मानसिकता को व्यक्त करती है। साथ ही साथ मानवीय रिश्तों को अन्याय-अत्याचारों को भी प्रभावित ढंग से प्रस्तुत करती है।

पाली :-

भीष्म साहनी का इ.स.1989 में प्रकाशित 'पाली' छटा कथासंग्रह है। 'पाली' कहानी हिंदू निर्वासित मनोहरलाल और उसकी पत्नी कौशल्य की करूण गाथा है। जो देशविभाजन के समय घटित हुई है। देश विभाजन के समय निर्वासितों के साथ मनोहरलाल अपने पत्नी के साथ पाकिस्तान छोडकर दिल्ली आ जाते हैं। शरणार्थियों के काफिले लारियों में भर-भरकर भारत में आ रहे थे तब उसकी बेटी अमृतसर के पास दंगाइयों द्वारा मार डाली जाती है और बेटा पाली पीछे छूट जाता है। अपना घरबार और बच्चे खोकर मनोहरलाल पत्नी के साथ दिल्ली आता है।

शरणार्थी मनोहरलाल अनेक दिनों तक काम के लिए दिल्ली में भटकता रहता है। आखिर बाजार में ठेला चलाने लगता है। कौशल्य की हालत बच्चों के बिना पागल-सी हो जाती है तो मनोहरलाल घटित हादसे को भूलकर भी भूल नहीं पाता। इधर पाकिस्तान में बाँझ जेनब और शकूर रस्ते पर मिले 'पाली' को खुदा की देन मानकर उसको अपने बच्चे के समान पालन-पोषण करते है। मौलवी के अनुसार पाली को इस्लाम धर्म में दीक्षित किया जाता है। अब पाली, इल्ताफ हो जाता है। इल्ताफ अब मस्जिद के स्कूल में दाखिल होता है। नमाज तक पढ़ने लगता है। जेनब और शकूर सुखी जीवन के सपने देखने लगते हैं।

मनोहरलाल को दो साल के परिश्रम के बाद पता चलता है कि अमूल मुहल्ले के शकूर बर्तन फरोश के घर पाली है। लेकिन शकूर और जेनब पाली को वापस भेजने के लिए तैयार नहीं होते। तब भारतीय अधिकारी, पुलिस और समाजसेवक के साथ मनोहरलाल अब उनके घर चला जाता है फिर भी शकूर पाली को भेजने तैयार नहीं होता। अब पाली का मामला धर्म का मामला बनता है। इल्ताफ भी

जन्मदाता पिता को नहीं पहचानता है। आखिर जेनब कौशल्य के मातृप्रेम को देखकर एक शर्त पर इल्ताफ को मनोहरलाल के हवाले करती है कि हर साल ईद के मौके पर इल्ताफ को उसके पास भेजा जाना चाहिए।

इल्ताफ मनोहरलाल के घर पाली बन गया। उसपर हिंदी धर्म के संस्कार कर उसका नाम यशपाल रखा गया। लेकिन पाली अपने पूराने संस्कार नहीं भूल जाता। जब नमाज का वक्त होता वह नमाज पढता। माँ-बाप को वह अब्बा-अम्मी कहता है। जेनब को आशा है पाली ईद के मौकेपर उसके पास जरूर आयेगा। चौधरी और मौलवी की दृष्टि से पाली हिंदू या मुसलमान है लेकिन कौशल्य और जेनब की दृष्टि से वह उनका अपना बेटा है। देश के बटवारे के समय लिखी पाली एक सांप्रदायिक पृष्ठभूमी में घटित एक महत्वपूर्ण रचना है।

इंदिरा गांधी की हत्या के बाद हुए साम्प्रदायिक दंगों की पृष्ठभूमि को आज की सामाजिक और साम्प्रदायिक परिस्थिती को 'झुटपुटा' कहानी प्रस्तुत करती है। इंदिरा गांधी की हत्या के बाद सिक्खों के घर जलाए, उनका कत्ल किया। लेकिन हिंदु उनकी जान की रक्षा करने में लगे। कहानी के हिंदुओं को सिक्खों को मारने में दिलचस्पी नहीं, उनके दूकान का सामान लुटने में है। गुण्डों ने सिक्खों की कार समझकर हिंदु की कार जला डाली। दंगा शांत होनेपर नेता चौधरी शांति का उपदेश देने घर से बाहर निकलते हैं। इस कहानी में नेताओं की पोल खोली है। इसी दृष्टि से 'झुटपुटा' शीर्षक सार्थक है।

'प्रादुर्भाव' कहानी आकाशवाणी के अफसरों की चालाकी को स्पष्ट करती है। आकाशवाणी के निदेशक शिवानंद को चालीस रूपये देते हैं लेकिन अन्य लोगों को सौ-सौ रूपये देते हैं। वे शिवानंद की उपेक्षा करते है। अपने ऑफीस के कर्मचारीयों को समझाते हुए कहते हैं - चेक हमेशा बंद लिफाफे में देने चाहिए, ताकि एक-दूसरे को पता न चले कितने पैसे मिले हैं। कहानी में अफसरशाही की चालाकी उभरकर सामने आती है।

न्यायव्यवस्था और अफसरशाही की तानाशाही पर करारा व्यंग्य करनेवाली कहानी है 'मरने से पहले'। इसका नायक अपनी जमीन दूसरे के कब्जे से मुक्त करने के लिए बीस साल तक अदालत में न्याय माँगता है। वह अफसरों की जेब भरता है, लेकिन उसका काम नहीं होता। उसका रिश्वत से भी विश्वास उठता है। वह बूढे वकील को जमीन दिलवाने का वादा कर जमीन के कब्जे के सपने देखने लगता है। जमीन मालिक यह सोचते हुए मर जाता है कि उसने एक तरह से मुफ्त में ही एक तिहाई जमीन वकील को दे दी। लेकिन अन्त तक उसे न्याय नहीं मिलती। यही आज के युग में भी न्यायव्यवस्था का प्रमुख दोष है।

आज के साहित्यकार और कलाकारों पर 'सेमिनार' कहानी व्यंग्य करती हैं। कलाकारों को और साहित्यकारों को बडे व्यापारी-पूँजीपति लोग पैसे के बल पर खरीदते है यही कहानी 'सेमिनार' के विज्ञापन की साक्ष देते हैं। सामान्य लोगों को भी खरीद लिया जाता है। आज के युग में पैसा ही सबकुछ बन गया है। जनता और विद्वान पैसे के सामने कुछ भी नहीं है।

पंजाब में स्थित आतंकवाद पर आधारीत 'नैसिखुआ' कहानी है। कहानी का नायक आतंकवावदी अमरजीत है। जिसने गुरूओं के बलिदान, साहस, मुस्लिमों के अन्याय के विरुद्ध सिक्खों के संघर्ष और बलिदान के किस्से संस्कार रूप में ग्रहण किये है। सिख पंत की मुक्ति के लिए और सेवा के लिए वह आतंकवादी बनता है। अमरजीत पर किताबों का दूकानदार हरवंशलाल की हत्या करने की जिम्मेदारी सौपी जाती है। दूकानदार को गुरूगोविंदसिंह की जीवनी माँगते समय उसके हाथ में गुरू कड़ा देखकर वह उनपर गोलियाँ दागता नहीं। लेकिन अमरजीत का दूसरा आतंकवादी साथी दूकानदार हरवंशलाल की हत्या करता है। स्वार्थी लोग और विदेशी शक्तियाँ नौजवानों को भ्रमित कर रही है यही संकेत लेखक ने 'नैसिखुआ' कहानी से दिया है।

यथार्थ जीवन से भागनेवाले नौजवान की कहानी है 'देवेन'। देवेन की उम्र बढ़ती जा रही है इस कारण उसकी बुढ़ी माँ चाहती है वह शादी करे अपना घर बसाए। लेकिन देवेन हमेशा मानसिक

तनावों में ही जीता है। वह साहित्य और जीवन खोजने पहाड़पर चला जाता है। तब उसे पता चलता है कि यथार्थ जीवन घर मे माँ के रूप में है। अन्त में देवेन को साहित्य की प्रेरणा एक बुढ़ी औरत से ही मिलती है। आज के मानसिक रूप से टूटे नौजवानों की प्रतीक 'देवेन' कहानी है।

'चोरी' एक साधारण कहानी है। वीणा और उसकी सहेली की बातों से पता चलता है कि बम्बई में फायदेमंद वस्तुओं की ही चोरियाँ होती हैं। वहाँ उच्चशिक्षित को उचित नौकरी नहीं मिलती। वह एक मामुली कंडक्टर हो जाता है और उच्चशिक्षित लडकियों से लगाव रखता है।

पहले गरीब होनेवाले मदनगोपाल, खंडसारी की एजन्सी, ट्रक के ठेके तथा शेअर के बल पर दो नंबर के पैसों के धनी होनेवाले व्यक्ति की कहानी है 'खुशबू'। वह पैसों के बल पर मंत्रियों से रिश्ते स्थापित करता है और उनसे काम करवाता है। उसका दिल इसलिए दर्यादिल है कि वह अपनी बेईमानी छुपा सके। उसके दाहसंस्कार में लोग अपना कर्तव्य पूरा करने के हेतू शामिल होते हैं। इस युग में पैसा ही सबकुछ है। उसके कारण दोस्तियाँ बढती भी है और बिगड़ती भी है। लोग भी पैसेवालों का इसलिए गुणगान करते हैं कि उनसे रिश्ता स्थापित हो। समाज के खोकलेपन पर चोट करनेवाली यह कहानी है।

'झूमर' कहानी उस अर्जूनदास की है जो अपने नाटक के माध्यम से अंग्रेजी सत्ता के खिलाफ लोगों को जागृत करता है। खुद स्वतंत्रता आंदोलन में हिस्सा लेकर जेल चला जाता है। देश को आझादी मिल जाती है। लेकिन अर्जूनदास अपने दोस्तों की तरह आजादी का कोई लाभ नहीं उठाता। वह अपने घर का खर्चा ठीक तरह से नहीं चला सकता। इसलिए उसकी पत्नी को अध्यापिका बनना पडता है। उसे इस बात का पश्चाताप है कि वह अपने परिवार की हालात नहीं सुधार सका। इस कहानी में लेखक बताना चाहते है कि जिंदगी के फैसले सोच समझकर नहीं किये जाते हैं, जैसे जिंदगी चलती है उसमें इन्सान बहता चला जाता है।

'आवाजे' कहानी पाकिस्तान से आये शरणार्थीयों के जीवनसंघर्ष को स्पष्ट करती है। पाकिस्तान से आये शरणार्थी दिल्ली के एक मुहल्ले में बस जाते हैं। शरणार्थियों के रहने की जगह बदल गयी है लेकिन उनकी भाषा, संस्कृति, रहनसहन, रीतिरिवाज, पोशाख, परंपराएँ इनमें कोई बदलाव नहीं आया। शरणार्थियों का परिवेश बदलने से कोई खास बदलाव लोगों में नहीं जिसे कहानी की घटनाओं के माध्यम से दर्शाया है।

इस प्रकार 'पाली' कथासंग्रह लेखक में देश-विभाजन के प्रसंगों का और मानव के यथार्थ जीवन का चित्रण रेखांकित किया है। आपका यह कथासंग्रह सामाजिक चेतना को जागृत करता है। सामाजिक प्रसंगों को सहज और सुलभता से अभिव्यक्त करने में आपने इस कहानियों में कोई कमी नहीं की है।

मेरी प्रिय कहानियाँ :-

भीष्म साहनी का कुछ कहानियों का संग्रह है 'मेरी प्रिय कहानियाँ'। इनमें 'वाङ्चू', 'लीला नन्दलाल की', 'अमृतसर आ गया', 'चीफ की दावत' जैसी प्रसिद्ध कहानियाँ प्रकाशित की हैं। हमने इनकी चर्चा करते हुए देखा है कि भीष्म साहनी की कहानियों का केंद्रबिंदू 'व्यक्ति' नहीं बल्कि 'मनुष्य' है।

भीष्म साहनी ने समाज के ऐतिहासिक पृष्ठभूमि का ध्यान रखा है। स्वाधीनता से लेकर बिगडते जीवन मूल्यों का दर्शन कराया है। इनमें स्वतंत्रता प्राप्ति, साम्प्रदायिक दंगे, अफसरशाही, नेतागिरी, खोकली राजनीति सभी का जिक्र हुआ है। आपकी कहानियाँ मानवीय रिश्तों का आधार प्रदान करती है। प्रगतिशील मानवतावादी दृष्टिकोण आपकी कहानियों का मूलाधार दिखाई पड़ता है।

जीवनी

मेरे भाई बलराज :-

बलराज साहनी भीष्मजी के बड़े भाई है। बलराज साहनी की जिंदगी की घटित घटनाओं, प्रसंगों, विचारों का वस्तुनिष्ठता से 'मेरे भाई बलराज' में चित्रण किया है। भीष्मजी का जीवन परिवेश बचपन से लेकर युवावस्थां तक बलराजजी के साथ बीता है। बलराजजी का जीवनआदर्श भीष्मजी ने माना है। भाई के व्यक्तित्व से गहरे रूप में भीष्मजी प्रभावित है। विद्रोही व्यक्तित्व ने भीष्म साहनी के जिंदगी के सभी रास्तों को साफ किया है।

बलराज साहनी का घर छोडकर चले जाना, व्यापार न करना, पिताजी की इच्छा के खिलाफ अपनी शादी करना आदि बातों से बलराज साहनी बचपन से विद्रोही स्वभाव के रहे इसका पता चलता है। इसीकारण भीष्म साहनी को अपनी जिंदगी में कभी विद्रोह करना नहीं पडा। उन्ही के कारण भीष्मजी के सभी रास्ते साफ हो जाते थे। भीष्मजी ने बलराज के विद्रोही व्यक्तित्व में छिपे कलाकार की तडप को भी स्पष्ट किया है। बलराज के कथनी और करनी में अन्तर नहीं है। अपने अभिनय के माध्यम से उन्होंने अपनी जिंदगी को नया आयाम दिया, लेकिन अपनी जमीन से कभी जिंदगी का रिश्ता नहीं तोडा। इसीकारण वे लोगों में अधिक लोकप्रिय हो गए।

बलराज साहनी ने एक सौ पैतीस हिंदी फिल्मों में प्रामाणिक और संवेदनशील भूमिकाएँ प्रस्तुत की। यह उनके कलात्मक और सामाजिक दृष्टिकोण और संवेदनशील प्रवृत्ति के कारण ही संभव हो सका है। जब कि आज के फिल्मी कलाकारों का जनसाधारण की जिंदगी से सीधा रिश्ता कम होता चला जा रहा है। बलराजजी की जिंदगी हमे नई प्रेरणा देती है। जिंदगी में समस्त मानव को सुखी बनाने की प्रेरणा देती है। 'मेरी भाई बलराज' में भीष्मजी ने बलराज साहनी के बचपन से लेकर मौत तक की सभी घटनाओं का लेखाजोखा हमारे सामने प्रस्तुत किया है। उनके गुणदोषों के साथ व्यक्तित्व के नये आयामों को भी खोल दिया है। एक आदर्श जीवन का मिसाल भीष्मजी ने हमारे सामने रखा है।

भीष्म साहनी के कृतित्व से हमें आपकी प्रतिभा संपन्नता का, अंतदृष्टिका, जीवनानुभव का, निरीक्षण और संवेदना का, विचारधारा का, साधना और अध्ययनशीलता का परिचय मिलता है।

भीष्म साहनी ने बालसाहित्य में एक 'गुलेल का खेल' नामक किताब लिखी जिसे छोटे दर्शकों ने बहुत पसंद किया। साथ ही साथ विभिन्न रूसी पुस्तकों के अनुवाद आपने किये। यशपाल के उपन्यास 'दिव्या' का अंग्रेजी अनुवाद किया। बीस हिंदी कहानियों का अंग्रेजी अनुवाद किया। रूसी भाषा साहित्य के अंग्रेजी अनुवाद कार्य किया। इसी प्रकार भीष्मजी ने हिंदी साहित्य को एक नया आयाम दिया।

भीष्म साहनी में प्रतिभा के साथ जीवन का अवलोकन और अनुभूतियों का इतना भण्डार था जो आपके साहित्य के नाटक, कहानी, उपन्यास आदि में व्यक्त हुआ है।

14379

A